ॐ

अहिंसा परमो धर्म यतो धर्मस्ततो जयः,
मैत्री प्रमाद् कारुण्य माध्यस्थ चिन्तयेद्बुधः ॥

Anmol Buti

अनमोल बूटी

जिसको

श्री ... सीलालजी बी० ए० जे० डी० ... शहरी,
... हैडक्लर्क, अमरोहा ज़िला मुरादाबाद
... चित उर्दू पुस्तक में अनुवाद करके
प्रकाशित कराया

कार्तिक
वीर नं० सम्वत २४४१

प्रथमबार १००० प्रति   मूल्य ।)॥

Printed by M. Har Parshad at M. Har Parshad Press, Bulundshahr

इसी उर्दू पुस्तकका मूल्य =)॥

Master Bihari Lal, V. A. J. D., Bulandshahr.
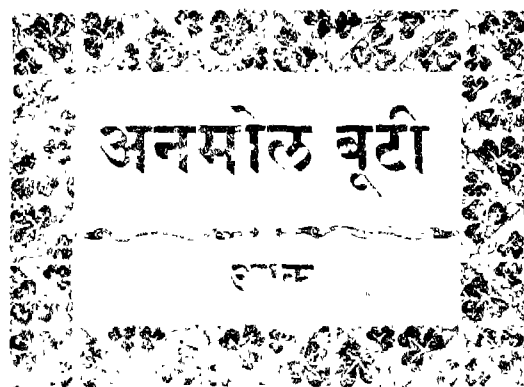
श्रीमान मास्टर बिहारी लाल जी वी॰ ए॰ जे॰ बुलन्दशहरी

॥ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अनमोल बूटी

॥ सोरठा छन्द ॥

छिन रागादिक दोष, हानि रहित जो सिद्ध हैं।
ज्योति मलिन और रोष, लालस माया मान जिन ॥ १ ॥
ऐसे निर्मल देव, प्रथम उन्हीं वन्द करूं।
कारण अक्षय सुख देव, अनुमानादिक अर्थ के ॥ २ ॥

१ नोट—यह पुस्तक उर्दू भाषा से जिस में कई बार मुद्रित हो हो कर प्रकाशित हो चुकी है हिन्दी अक्षरों में उल्था की गई है और हिन्दी में उल्था कराने वाले प्रेरक मित्रोंके नीचे लिखे सुविचारों को सर्व साधारणके लिये विशेष लाभ दायक जानकर उसके उर्दू शब्दों को हिन्दी शब्दों में न उल्था करके आवश्यक्तानुसार कठिन उर्दू शब्दों का अर्थ हर पृष्ट के नीचे के भाग में फुट नोटों द्वारा कर दिया गया है ॥

१-इस देश में जो महाशय उर्दू नहीं जानते उनकी नित्य प्रति की साधारण बोल चाल (सिवाय उन महाशयों के जिन को उर्दू जानने वालों

से बात चीत करने का कुछ काम ही नहीं पड़ता या बहुत ही कम काम पड़ता है) प्रायः उर्दू भाषा से ही बहुत कुछ मिलती जुलती है और इसी लिये देखने में आता है कि कम हिन्दी जानने वाले महाशयों को शुद्ध हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के समझने में सरल उर्दू भाषा के ग्रन्थों से जो हिन्दी अक्षरों में हों कुछ कम कठिनाई नहीं पड़ती किन्तु और अधिक ही पड़ती है ॥

२-इस उर्दू पुस्तक की कुछ ऐसी कठिन उर्दू नहीं है और जो कहीं कहीं कठिन शब्द हैं भी तो उनका हिन्दी अर्थ फुट नोटों में दे देने से उर्दू न जानने वाले महाशयों को इस पुस्तक के विषयों को भले प्रकार समझ लेने में किसी तरह की कठिनाई भी नहीं पड़ेगी ॥

३ जो महाशय उर्दू अच्छी जानते हैं और हिन्दी में बहुत कच्चे हैं या हिन्दी अच्छी जानते हैं और उर्दू में बहुत कम अभ्यास रखते हैं वे अगर दोनों प्रकार की यह पुस्तक पास रक्खें तो अपनी कच्ची भाषा को सुधार कर पक्की कर सकते हैं ॥ और ऐसे दोनों प्रकार के महाशयों के लिये यह हिन्दी पुस्तक कठिन शब्दों का अर्थ फुट नोटों में होने से एक छोटे से कोष (लुग़त) का भी काम देगी ॥

२ नोट—यह पुस्तक नीचे लिखे तीन अधिकारोंमें विभाजित है ॥

१ प्रथम अधिकारमें अनमोल बूटी के अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, हिन्दी और अंगरेज़ी भाषाओं के तीन तीन प्रसिद्ध नाम, उस के लक्षण, चिह्न, उत्पत्ति स्थान, भेद और उस के अंग अंग के अलग २ गुणादिक वर्णित हैं ॥

२ दूसरे अधिकार में हर रोग की उत्पत्ति का कारण, उससे बचे रहने के उपाय, और उसकी पहिचान के लक्षणादि निदान बताते हुए उस अनमोल बूटी के अंगो पांग के कई कई अनुपानों द्वारा रोग चिकित्सा वर्णित है ॥

३-तीसरे अधिकार में चांदी सीसा आदि धातु उपधातुओं को उसी अनमोल बूटी द्वारा शोधने और फूँकने की उत्तमोत्तम कई २ विधि और इन फुकी हुई धातु उपधातुओं के बहुत २ से रोगों पर अलग २ अनुपान, शिक्षा, परहेज़, उतार आदि दश २ आवश्यकीय विषय वर्णित हैं ॥

इसी अधिकार के अन्तमें अनमोल बूटी ही से हरिताल तबक़ी का तेल निकालने और उसको तैयार करने और शोरा, ज़ंगार, नीलाथोथा और शिंगरफ़ को क़ायम नार करनेकी विधि वर्णित करके पुस्तकको समाप्त किया है ॥

मााहियत — यह एक मशहूर रोईदगी १ बलांहै जो अकसर जंगल में रेतेली ज़मीनमें ज्यादा होती है - इसका फल किसी क़दर मुशाबा आम के होताहै जिसके अन्दर निहायत मुलायम रूई और छोटे छोटे बारीक व चपटे बीज ख़ाकिमतरी, मायल ब स्याही रंगके निकलतेहैं और बर्ग व शाख़ तोड़ने से रतूबत सफ़ैद मिस्ल दूधके निकलती है ॥

अकसाम — यह पौदा तीन क़िस्मका होताहै । एक वह जिसका दरख़्त बड़ा, फूल सुफ़ेद, पत्ते बड़े २, दूध बहुत । दूसरा वह जो क़द में उस से छोटा, फूल सफ़ेद, अन्दर बनफ़शई, रंग मायल ब सुर्ख़ी, दूध बहुत कम । तीसरा वह जो सब से छोटा, फूल पिस्तई, रंग मायल ब सुफ़ेदी या ज़र्दी, दूध कम । इस में क़िस्म अव्वल बहतरीं सब अक़साम में है ॥

तबीअत मय ख़वास व अफ़आल

१-शीर२ गर्म व ख़ुश्क बदर्जे चहारम। फ़ाताए बलग़म, व कुव्वते मुसहिल: क़वीया, मुक़र्रह जिल्द (खाल में क़ुरहा यानी ज़ख़्म डालने वाला) सम्मफ़ातिल अकलन ✝ (खाने में), बवजह तक़र्रुह अहशा (दिल व जिगर व मेदा व आंत) के मूजिब वर्म व ख़ारिश व सुर्ख़ी * बराय १ वरम, व बतरकीब ख़ास (मुन्दरजा बाब दोम) इस्तेमाल में लाने से २ रमद वरम, व ३ ज़ोफ़ बसर व ढलका, व ४ सुलाक़, व खांसी, व दमा, व गठिया, व दर्द ५ दन्दां, व बवासीर, व ख़ारिश, व दाद, व फुंसी फोड़ा, व गंज, व मुँह आना, व ६ नैश-अक़रब,व ७ गज़ीदगी मार, व ८ सग दीवाना, व अपरस नासूर, व मा-सर्दी व सख़्ती तिहाल व अमराज़ जिगर व कद्दूदाना वर्दीदान(पेट के कीड़े)व ९ जुज़ाम व जलन्धर वग़ैरा के लिये मुफ़ीद है ॥

२-चोब व शाख़ व पत्ते गर्म व खुश्क व दर्जे सोम, व तर्कीब ख़ास इस्तेमाल में लाने से मुफ़ीद

---

१ कलां-बड़ी । २शीर-क्षीर-दूध ॥

✝ अगर इत्तिफ़ाक़न खालिया जावे तो शीर गाव और रोग़न ज़र्द व कसरत खाना पीना मुफ़ीद है दूध और रोग़न ही इसका मुसलह है ॥

* अगर इत्तफ़ाक़न आंख में लग-जाय तो बकरीके दूध से कपड़ा तर करके आंख पर रक्खें या गुशके में घी मिलाकर बांधें ॥

१ आंख, २ सुर्ख़ी, ३ कमज़ोरी नि-गाह, ४ आंखके पलक का मोटापन व सुर्ख़ी, ५ दांत, ६ डंक बिच्छू का, ७ काटना सांपका, ८ कुत्ता बावला ९ कोढ़ ।

बराय तहलील१ औराम व फ़ालिज व तशन्नुज व जलन्धर व ख़ारिश व ख़फ़ क़ान व खांसी व दमा व सांस व गिरानी २ गोश व दर्द गोश व नहरवा जोड़ों का दर्द व दर्द ज़ानूं व बवासीर व आतशक व नासूर व आधासीसी व सफ़ेद दाग़ व ज़ोफ़ बदन व नातवानी व गिरानी शिकम व हैज़ा वग़ैरः

(३)-(३)गुल व(४) गुंचा —

गर्म बदर्जे सोम व ख़ुश्क बदर्जे सोम व तर्कीब ख़ास मुफ़ीद बराय बद हज़मी व दर्द शिकम व नामर्दी व ख़फ़ क़ान व सांस व खांसी व तिल्ली वग़ैरा

(४)(५) बेख़(६) वपोस्तबेख़-

गर्म व दर्जे सोम व ख़ुश्क ब दर्जे चहारम ७ मुसहिल मुक़व्वी बलग़म का ८ अकलन व तर्कीब ख़ास मुफ़ीद बराय हैज़ा ख़फ़क़ानः आतशक मिर्गी दर्दशूल, दर्दहूक, सुलाक चश्म, नाख़ूना, दर्द दन्दां, दर्द पसली व ज़हर सांपवग़ैरः

(५)रुई-मुफ़ीद बराय चकमाक़ व पथरी व इख़राज ख़ून व अमराज़ बलग़मी व रीही वग़ैरह

१ वर्म २ कान

३ फूल, ४ कली, ५ जड़, ६ छाल जड़ की, ७ दस्त लाने वाली, ८ खाने में

(६)-गोंद—गर्म व ख़ुश्क बदर्जे अव्वल, अर्बी नाम सुककरुलउशर है

यह गोंद दरख़्त आक में निकलकर जम जाता है और बाज़ हुकमा की राय में शबनम है कि इस दरख़्त पर ख़ुरासाँ में बस्ता होती है ॥ यह कमयाब है ॥ सफ़ेद गोंद को यमानी और स्याह को हजाज़ी कहते हैं ॥ क़िस्म अव्वल बहतर और कम गर्म है ॥ हर दो क़िस्म का ज़ायक़ा शीरीं मायल ब तलख़ी व तुर्शी, व ज़ां बाद तलख़, यह १ मुक़व्वी बसर२ कुहलन व ३ मुफ़त्तह सुद्दा, व मुक़व्वी जिगर, व मुफ़ीद बराय सर्द खांसी ४ कुहना, व दर्द सीना व गुर्दा व मसाना, व अमराज़ फेफड़ा व सिल वग़ैरा अकलन (खाने में) मगर मुसद्दा (दर्द सर करने वाला) है ॥ कुव्वत इसकी बीस साल के क़रीब तक क़ायम रहती है ॥ बदल इसका शकर तेगाल है ॥

मुसलह (५)-इसका रोगन बादाम और नीज़ सब दूध व तेल और घी से तनक़ियह करना है

अलमज़ार-(६) इस पोदे के ७ जुमला अजज़ाय में ८ सम्मियत होती है मगर गर्म मिज़ाज को कम मुआफ़िक़ आता है

१ ताक़त देने वाला निगाह को, २ आंजने से, ३ खोलने वाला सुद्दे को ४ पुरानी ॥ ५ विष नाशक, हानी दूर करने वाला ॥ ६ हानि कारक ॥ ७ सर्व अंग ॥ ८ विषैलापन ॥ ९ गर्म प्रकृति वाला ॥

॥ बाब दोम ॥

इलाजुल अमराज़

(१) अमराज़ सर व दमाग़

असबाब (१)—२ कसरत फ़िक्र व ग़म, ३ कसरत रुत्ताब, ४ कसरत जमाअ ५ कसरत शब बेदारी कसरत महनत, ६ खुसूसन दमाग़ी, ७ कसरत आब व ८ शीत नोशी, दिल या दिमाग़ में किसी सदमे का पहुंचना, मुतवातिर ८ शुमाल की तरफ़ सिरहाना करके सोना, दमाग़ को ज़्यादा सर्दी या गर्मी का पहुंचना, पाख़ाना, व पेशाब की हाजत को रोकना, देर हज़म या क़ाबिज़ ९ अग़ज़िया का मुतवातिर खाना, बुखार में १० सक़ील ग़िज़ा खाना, व बवासीर का खून बन्द हो जाना औफ़नाक ख़्यालात का रखना, दिन में सोना सख़्त और बहुत पहनना हुक्का पीना, ११ मुनश्शी अशयाय खाना पीना, बदबू सूंघना तुर्श अशयाय ज़्यादह खाना

(१२) मुफ़ीद सर

—१३ असबाब मज़कूरह बाला से बचना, सिर में सरसों या स्याह तिल या बादाम या गोले का तेल या कोई १ मुरक्कब तेल डालना, कान में दूसरे तीसरे रोज़ तेल डालना, कंघी करना, बालों को साफ़ रखना, मुक़व्वी दमाग़ ग़िज़ा खाना, इतरीफ़ल का कभी २ इस्तेमाल रखना वग़ैरह ॥

(२) मुज़िरात दमाग़—

हींग, ख़शख़श, अलूबुखारा, कांट कटारा, तम्बाकू, बर्फ़

२-सुदाअ (दर्द सर)

अलामात व शनाख़्त:—

जितने मुख़्तलिफ़ असबाब से यह पैदा होता है उतनी ही मुख़्तलिफ़ हालतें इस में ज़ाहिर होती हैं यानी ३ सौदावी में ४ शब वक़्त शब दर्द की ज़्यादती हो जाती है बांधने या सेंकने से आराम मालूम होता है, ५ सफ़रावी में पेशानी पर सख़्त गर्मी आग की सी और नाक में सोज़िश महसूस होती है ताल भी कम पड़ जाता है। सर्द चीज़ों के

---

१ कारण ॥ २ अधिकता, अति ॥ ३ निद्रा ॥ ४ स्त्री पुरुष का समागम वा भोग ॥ ५ रात का जागना ॥ ६ मुख्य कर ॥ ७ पानी ॥ ८ उत्तर दिशा ९ ग़िज़ा, भोजन ॥ १० देर हज़म, कुपथ्य ॥ ११ नशीली चीज़ें मादक वस्तुएं ॥ १२ लाभ दायक सिर को १३ उपरोक्त कारण ॥ १ मिश्रत कई औषधी से मिला कर बनाया हुआ २ हानिकारक ॥ ३ वातज ॥ ४ रात्रि के समय ॥ ५ पित्तज ॥

लेप से आराम पड़ता है॥१ बलग़मी में दमाग़ व वजह ज़्यादती बलग़म के भारी और सर्द मालूम होता है आंख नाक और मुंह पर क़दरे वर्म भी आ जाता है। २ दमवी में सफ़रावी की कुल अलामात के अलावा पेशानी पर हाथ लगाना नागवार मालूम होता है॥ जो दर्द चारों अख़लात* ३ मज़कूरा के ४ ग़लबे या ५ फ़िसाद से हो उस में कमोबेश जुमला अलामात मज़कूरा ज़ाहिर होती हैं॥ जो बवजह ज़ौफ़ दमाग़ हो उस में छींक ज़्यादह आती हैं, पेशानी गर्म रहती है, दर्द बहुत मिहनत से होता है जो दर्द सर दमाग़ में कीड़ा लग जाने से होता है उस में सख़्त दर्द होता है पेशानी अन्दर से फड़कती मालूम होती है, नाक से पीप और बाज़ औक़ात ख़ून निकलता है, या नाक से बदबू आती है॥ जो गर्मी से होता है उस में गर्मी व गिरानी व सोज़िश महसूस होती है॥ अशयाय सर्द से नफ़ा और गर्म से ज़रर पहुंचता है जो सर्दी से हो उस में [illegible] सुस्ती, सोज़िश न होना अशयाय गर्म से नफ़ा और सर्दी से ज़रर मालूम होते हैं और जो दर्द सर ब वजह रीह के हों उस में एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम दर्द का मुन्तक़िल होना और कान में किसी क़िस्म की आवाज़ का मालूम होना अलामात ज़ाहिर होती हैं इन सब क़िस्मों में जो दर्द कि चारों ख़िल्तों या उन में से किसी एक दो, या रीह या ज़ौफ़ दिमाग़ की वजह से होता है उसे बादी, और जो दीगर वजूहात से होता है उसे साज़ज कहते हैं॥ और जो निस्फ़ सर में होता है वह दर्दे शक़ीक़ा है जिसका आगे अलहदा इलाज मुन्दर्ज है

अस्बाब —कमी व बेशी या फ़िसाद १ अख़लात अरबा, रीह, ज़ौफ़ दमाग़, दमाग़ में कीड़ा लग जाना, आग, या धूप, या हवा की गर्मी, गर्म ग़िज़ा, या गर्म दवा खाना, सर्द आब व हवा, सर्द ग़िज़ा या सर्द दवा खाना, मरतूब या सर्द मुक़ाम पर रहना, तकान, बद हज़मी बुख़ार, ज़्यादह जागना, ज़्यादह सोना व बू दमाग़ को चढ़ना, बाज़

---

१ कफ़ जनित ॥ २ रुधिर जनित।

* सौदा सफ़रा बलग़म दम यानी ख़ून यह अख़लात अर्बा कहलाते हैं इस को हिन्दी में [illegible] वात पित्त कफ़ और रुधिर कहते हैं॥ इन में से ख़ालिस सौदा का तबई मिज़ाज सर्द व ख़ुश्क, रंग स्याह, मज़ा मायल ब तुर्शी है॥ ख़ालिस सफ़रा का तबई मिज़ाज गर्म व ख़ुश्क, रंग सुर्ख़ मायल ब ज़र्दी और मज़ा तेज़, व तल्ख़ी मायल है॥ ख़ालिस बलग़म का तबई मिज़ाज सर्द व तर, रंग सफ़ेद और मज़ा फीका है॥ ख़ालिस दम यानी ख़ून का तबई मिज़ाज गर्म व तर, रंग सुर्ख़ और मज़ा मीठा है॥

३ उपरोक्त ४ अधिकता ५ विकार दोष

(अस्बाब) १ वात, पित्त, कफ़ रुधिर इनका विकार या दोष॥

औक़ात सांप काटे का ज़हर उतर जाने के बाद वग़ैरः

१ इलाज*—अनमोल बूटी के दूध में थोड़े से साठी चावल या गेहूं एक चीनी के बर्तन में रख कर तर करें। और साये में खुश्क करलें॥ यही अमल तीन बार करके उन्हें खरल में बारीक पीसलें और शीशी में भर कर रख छोड़ें जब ज़रूरत हो उसका नास लें हर किस्म के दर्द सर को अजब मुफ़ीद है

(२) अनमोल बूटी के दूध में जंगली कंडों की राख तर करके साये में सुखायें॥ और नास बनाकर ब वक्त ज़रूरत सूंघें॥ हर किस्म के दर्द सर को निहायत मुफ़ीद है॥

(३) पुरानी रुई को और अनमोल बूटी में तर करके दोनों तरफ़ कन-पटियों पर चस्पां करें॥

परहेज़ः- १ जमाअ, दमाग़ी मह-नत, तुर्शी सक़ील व देरहज़्म और तबख़ीर २ व नफ़ख़ पैदा करने वाली गिज़ा, आग या धूप की गर्मी, तेज़ हरकत जिस्म वग़ैरह॥

२-दर्द शक़ीक़ा (आधासीसी)

अलामात व शनाख़्त—

इस मर्ज़ में ३ निस्फ़ पेशानी व एक कनपटी व भौं व कान पर दाईं या बाईं एक जानिब किसी हथियार के लगने का सा दर्द होता है किसी को रोज़ाना किसी को कुछ वक़्फ़ा देकर दौरैसे होता है। किसी को ५ अक्सर पर सुबह से दो पहर तक ज्यूं २ सूरज चढ़ता है ज्यादा होता जाता है और बाद दो पहर ज्यूं २ सूरज डूबता जाता है कम

---

* यह दोनों नुस्खे निरवार (नास) के, आधासीसी, व ज़ुकाम, व नज़ला व रतूबत दमाग़, व सर भारी होने और सांप, व बिच्छू वग़ैरह ज़हरीले जानवरों के काटे को निहायत मुफ़ीद हैं॥ बल्कि जो लोग किसी बाइस से तम्बाकू के पत्ते की निरवार अकसर लिया करते हैं और उसके आदी हो जाते हैं उनके लिये भी यह नास बहतरीं दवा है

अमराज़ बलग़मी में पहर दिन चढ़े सफ़रावी में दोपहर को, सौदावी में सह पहर के वक्त नास लेना ज्यादह मुफ़ीद है मगर ज़न हामला को, ज़ईफ़ सिन रसीदा को, कमसिन बच्चे को, और ज़हर खुर्दा को नास देना मना है॥ व नीज़ शब को भूक व प्यास में बदहज़मी में गुस्से या फ़िक्र में ग़ुस्ल होने पेशाब या पख़ाने में, बाद गुस्ल, सोते से जागते ही और ज़ुकाम होते ही नास लेना मने है

१ स्त्री पुरुष का समागम २ अफ़ारा ३ आधा माथा ४ अंतर ५ भौं

होता जाता है हत्ता कि गुरूबआफ़ताब पर बन्द हो जाता है ॥ ऐसे सुदाअ शक़ीक़ा को हिन्दी में सूर्य्यावर्त आधा सीसी, और इस्तिलाह तिब्बी में असाबा बजबान अर्बी कहते हैं ॥

अस्बाब. यह मरज़ अकसर रूखी चीज़ों के खाने, ज्यादा खाने, खा चुकने के बाद क़ब्ल तहलील ग़िज़ा फिर जल्द खाने, पुर्वाई हवा के ज्यादा लगने, ज्यादा २ जमाअ करने पाखाना पेशाब की हाजत को रोकने, कसरत मिहनत वग़ैरह अस्बाब से अकसर हो जाता है जब बहुत पुराना हो जाता है तो बमुश्किल जाता है ॥

इलाज. (१) अलसीळ बूटी के एक ज़र्द पत्ते पर दोनों तरफ़ घी चुपड़ कर गर्म करके उसका पानी दर्द से दूसरी तरफ़ के कान में निचोड़े ॥ अगर बिनदाल को पानी में घिसकर उसके साफ़ पानी की नास भी लें तो और भी जल्द हर क़िस्म के दर्द शक़ीक़ा को आराम हो ॥
(२, ३) दर्द सर के नुस्खे न० १, २ निहायत मुफ़ीद हैं ॥

परहेज. तुर्शी, ग़लीज व सक़ील ग़िज़ा, ख़ुश्बोरया[१] ३[२] नफ़्ख़ पैदा करने वाळी ग़िज़ा, ज्यादती ग़िज़ा, दौड़ना वग़ैरः तेज़ हरकत व जुंबिश, जमाअ, गर्म पानी सर पर डालना ॥

१ सूर्य अस्त २ स्त्री पुरुष संसर्ग, काम सेवन.३ अफ़ारा

३ नजला व ज़ुकाम

अलामात. जब फ़ुज़लात दमाग़ से नाक की राह निकलें तो उसे ज़ुकाम और जब हलक़ की तरफ़ गिरें तो उसे नज़ला कहते हैं ॥ इसमें छींक आना, सर भारी रहना, आंखें किसी क़द्र सुर्ख़, नाक रुकी हुयी, या इस से पतला बल्ग़म झड़ना, उस में ख़ारिश सी मालूम होना, दमाग़ में गर्मी सर में दर्द मसूड़ों में दर्द, आंखों में सोज़िश, गले में ख़राश खांसी बुख़ार की हरारत, कनपटी पर दर्द वग़ैरः अलामात कमोबेश ज़ाहिर होती हैं ॥ इसको बहने से रोकना अच्छा नहीं इसके बिगड़ने से बुख़ार निमूनिया वग़ैरः बीमारियाँ रुकने से दमाग़ में बलग़मी बीमारियां हो जाती हैं ॥ मगर ज्यादा दिनों तक इसका जारी रहना भी अच्छा नहीं नज़ले का नाक की तरफ़ को ख़ारिज होना बनिस्बत किसी दूसरी तरफ़ को रुजूअ होने के बहुत अच्छा है यह अगर आंखों की तरफ़ को रुजूअ हो जाय तो मोतियाबिन्द करके आंखों को बेकार कर देता है अगर बालों की तरफ़ को रुजूअ हो तो उन्हें सफ़ेद कर देता है ॥ हलक़ में गिरता है तो गले में ख़राश, सीने पर दर्द, व दीगर अमराज सद्र व शुश (सीना व फेफड़ा) पैदा करता है

अस्बाब.दमाग़ को यकायक ज्यादा सर्दी पहुंचना, सर्दी गर्मी का मिलना, तबदीली मौसिम या किसी दूसरी वजह से, आग धूप या किसी दूसरी गर्मी का ज्यादा असर पहुंचना, १ कसरतशबबेदारी, दिन में अकसर सोना खुसूसन मौसिम सर्मा में सोते से उठ कर फौरन पानी पी लेना मिट्टी के तेल का धुआं हलक में पहुंचना ॥

इलाज.(१) दर्द सर के नुस्खे न० १ का नास तय्यार कर कैसूंघना २ अज़बस मुफ़ीद है ॥

(२) अनमोल बूटी के शाख़ व पत्ते वग़ैरः को साए में सुखा कर और क़द्रे सफ़ेद कनेर के फूल भी मिला कर बारीक पीस रक्खें, यह भी ज़ुकाम के लिये उम्दा निस्वार (नास) है ॥

परहेज.दूध, दही, मट्ठा, खटाई, ३ रोग़नी अशया, गर्म अशया पकवान या शीरीनी, अचार, उर्द इनका खाना, जिस्म पर तेल लगाना ज्यादा पानी पीना, दिन में सोना रात को ज्यादा जागना, गर्म पानी से न्हाना, ४ जमाअ करना, सर को खुला रखना, सर के नीचे ऊंचा तकिया रखना, औंधा सोना, किरोसीन आयल (मिट्टी का तेल) की रोशनी में पढ़ना लिखना, पेट भरे हुये पर सोना, सर्द पानी पीना बर्फ़ खाना, बिला ५ अशद ज़रूरत फ़स्द खुलवाना ॥

१ रात को अधिक जागना २ बहुत ३ तेल घी की चीज़ें ४ काम क्रीड़ा ५ निहायत

४-सरअ (मिर्गी)

अलामात व शनाख्त. इस मरज़ का जिस वक्त दौरा होता है मरीज़ चलते फिरते, उठते बैठते, ६ दफ़ेतन बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ता है हाथ पांव कज हो जाते हैं, दांती बन्द हो जाती हैं, हरकात ७ मुज़तरबाना बे इख़्तियार सादिर होते हैं, मुंह से कफ़ निकलता है, थोड़ी देर ऐसी कैफ़ियत रह कर खुदबखुद अच्छी हालत हो जाती है ॥ इस मरज़ में सिर का भारी होना, और ज़बान के नीचे की रगों का सब्ज़ होजाना लाज़मी है यह मरज़ अगर किसी ८ ज़ईफ़ को हो, या पुराना पड़ गया हो या जिसका जिस्म बार २ बहुत फड़के, या जिसकी भौं ज्यादा फड़के या जिसकी आंखें कुछ ९ ख़मीदा हो गई हों, या जिसके दौरे की आमद रोज़ाना, या बहुत जल्द २ हो, उसका मरज़ क़रीबन १० लाइलाज है॥ बुक़रात का क़ौल है कि जिस शख़्स को यह मरज़ पेडू पर बाल जमने से ११ क़ब्ल आरिज़ हो अ.लब

६ इकदम ७ बे क़रारी की या तड़पने की हरकतें ८ कमज़ोर ९ टेढ़ी १० असाध्य ११ पहले

है कि उसके लिये हुदूस इंतिक़ाल हो, और जिस शख़्स को इस मरज़ में पच्चीस साल गुज़र गये हों वह १ता बमर्ग इस से २ख़लासी न पायगा

अस्बाब, बवासीर का ख़ून बन्द हो जाना ३ दफ़ेतन किसी सख़्त सदमह रंज व ख़ुशी या ४ ज़रब का पहुंचना ज्यादह चमकीली चीज़ों का ज्यादह देखना, कसरत जमाअ व ५ जलक़ पेशाब का ज्यादह रोकना, ज्यादह लहसन या शीरीनी खाना और ज्यादह बुलन्द मुक़ामात पर चढ़ कर डरना वग़ैरह ॥

इलाज. अनमोल बूटी (आक) की जड़ के पोस्त को बकरी के दूध में घिस कर नाक में टपकायें चन्द बार के इस्तेमाल से सेहत होगी मरीज़ की गर्दन में एक जायफल लटका देना और कनी अंगुली का ख़ून निकालना और भी जल्द फ़ायदा देता है ॥ और नीज़ गधे के सुम की अंगूठी बनवा कर मरीज़ की अंगुली में पहनाना अज़हद मुफ़ीद है और ६ शरअ अतफ़ाल के लिये दो ढाई रत्ती उमदा निर्बिसी बच्चे की मां के दूध में घिस कर हलक़ में टपकायें

परहेज. हर क़िस्म का गोश्त, शराब, व भंग, अफ़यून वग़ैरह नशीली चीज़ें, तरमेवेजात ७ ख़ुसूसन अमरूद, दूध, प्याज़, मसूर, लहसुन मिर्च सुर्ख व खटाई वग़ैरह गर्म व चर्परी चीजें, तेज़ बदबू या ख़ुशबू पहिया व चाक व लट्टू वग़ैरह को घूमता देखना, बिजली या सूरज वग़ैरह ज्यादह चमकीली चीज़ें, और बहता या बहुत दूर तक फैला हुआ साकित पानी देखना, बहुत गहरी जगह को ८ बुलन्दी से देखना ९ सेरी के वक्त सोना १० होलनाक और धड़का या झंझनाने की आवाज़ सुनना, जमाअ करना, सर्द पानी से न्हाना, या गर्म पानी सिर पर डालना, आंधी या सर्द हवा में खड़ा होना, या ११ जनूबी हवा लगना, १२ मरतूब जगह जाना, ज्यादह गर्मी में रहना, मेह और धूप में फिरना॥ उमुलसिबयां (१३ सरअ अतफ़ाल) में ज्यादह गर्म या ज्यादह सर्द चीजों से और भी ज्यादह परहेज़ लाज़िम है ॥

५ फालिज व लकवा

अलामात व शनाख़्त-

१४ तूल में १५ निस्फ़ धड़के रह जाने को फ़ालिज़ (अर्धांग) और निस्फ़ जानिब से सिर्फ़ चहरे के टेढ़े हो

---

१ मौत तक २ रिहाई, छुटकारा ॥ ३ एकदम ४ चोट ५ हथलस ६ मिर्गी बच्चों की ७मुख्य कर ८ ऊंचाई ९ उदर पूर्णता, पेट भरना १०डरावनी सूरत ११दक्षणी १२नम तर १३मिर्गी बच्चों की १४लम्बाई १५आधा

जाने को लक़वा कहते हैं ।। यह मरज़ १ अकसर २ जिस्म के दाहने हिस्से में होता है, इन दोनों बीमारियों का सबब व इलाज क़रीबन एक ही है यह मरज़ अगर किसी कमज़ोर आदमी को हो, और उसकी पलकें बन्द न हों, और बोला न जाय और बदन कांपते हुये तीन साल गुज़र गये हों, तो क़रीबन ला इलाज है बल्कि दो माह में मुज़मिन३(कोहना) और छः माह हो में ला इलाज समझा जाता है ॥ जालीनूस कहता है कि जो लड़का या लड़की सबज़ी मायल पेशाब करे उसको फ़ालिज या ४ तशन्नुज ५ आरिज़ होगा ।।

अस्बाब-ब-आवाज़ बुलन्द चीख़ना, ऊंचे से गिरती हुई किसी भारी चीज़ को ऊंचा मुंह करके लपकना, बहुत हंसना या जम्हाई लेना ६ आसाब का दबना, पेशानी पर बहुत बोझ उठाना, नाहमवार जगह में सोना तल्ख़ चीजें बहुत खाना, घी व शहद या दही व गोश्त एक साथ खाना, यकायक किसी बन्द मकान से हवा में आना, वग़ैरः

इलाज- (१) अनमोल बूटी के पत्ते ४२ अदद, हल्दी दो माशे, बेर की लकड़ी का कोयला ५ माशे, ख़ूब बारीक पीस कर और घी ख़ूब गर्म बमिक़दार मुनासिब में मिला कर उर्द की बराबर * गोलियां बना रक्खें और एक गोली रोज़ ब वक्त सुबह चार पांच योम तक खायें ।

(२), अनमोल बूटी के पत्तों में अरंड, धतूरा, सहदेई, सहंजना, संभालू और असगंध इन सब के ७ मुसावी उलवज़न पत्ते मिला कर कूट कर अर्क़ निकालें, और इस अर्क़ के मसावी मीठा तेल उस में मिला कर जोश दें कि अर्क़ सब जल कर रोग़न रह जावे ।। फिर उस में सोंठ व कूट तल्ख़ पीस कर मिलालें और जिस्म पर मलें ॥

(३) अनमोल बूटी के पत्तों व शाख़ के अर्क़ को हमवज़न † रोग़न ज़ैतून में जोश दें कि सिर्फ़ रोग़न रह जावे इस * रोग़न को जिस्म पर मलें ॥

---

१ प्रायः २ शरीर, अंग ३ पुराना ४ आक्षेप, ऐंठन ५ पैदा ६ स्नायु, पट्ठे सफ़ेद सूत से बारीक रेशे मस्तिक से और रीढ़ से निकलकर जो सर्व शरीर में फैले हुए हैं जिनसे स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, पांचों इन्द्रियों के विषयकी सूचना मस्तिक में करती हैं॥

*यह गोलियां और भी चन्द अमराज़ इस्तिस्काय लहमी, बर्स, तप बलग़मी चौथैया, वजअ मफ़ासिल, हैज़ा व रअशा वग़ैरः सिमाज के लिये भी बहुत मुफ़ीद है -तरकीब इस्तेमाल अमराज़ मज़कूरा के मुआलजे में मुलाहज़ा करें ।।

७ बराबर तोल के

†यह रोग़न और भी चन्द अमराज़ तशन्नुज (ऐंठन और ख़दर (जिस्म का सुन्न पड़ जाना) वग़ैरह के लिये मुफ़ीद हैं

(४) दर्द सर के इलाज नं० १ या दो का नास तय्यार करके सूंघें कि माद्दे को सर से ख़ारिज करती है।

परहेज़. शराब व सिरका वग़ैरह और सर्दी, हवा सर्द, पानी सर्द, दतौन, ग़ुस्ल [स्नान] और जमाअ से परहेज़ करें। और इब्तिदा में दो तीन फ़ाक़े (लंघन) दें, बल्कि अगर मरज़ ज्यादः क़वी हो तो सात योम तक ग़िज़ा न दें। सिर्फ़ गुड़ एक हिस्से को पानी दो हिस्से में जोश देकर जब एक तिहाई बाक़ी रहे छान कर पिलाते रहें। बाद अज़ां भी बिला काफ़ी भूख के खाना न खिलाएँ। रात को मुतलक़ (लेश-मात्र, ज़रासा भी) खाना न दें। और बिला काफ़ी प्यास के शरबत सज़कर [उपरोक्त] भी न पिलाएँ मरीज़ को तारीक (अंधेरा) मकान में जहां हवा न लगे बिठाएँ। जिसको फ़ालिज तप के साथ हो गर्म अदवियात (दवाएँ, औषधियां) न दें बल्कि पहले तप का इलाज करलें तब इस मरज़ का इलाज करें फ़ालिज के मरीज़ के जिस्म को गर्म पानी मुज़िर (हानीकारक) है।

२- अमराज़ चश्म (नेत्र रोग)

असबाब. आंखों को धूप वग़ैरह की ज्यादः गर्मी पहुंचना, आंख या पेशानी पर कोई ज़रब लगना, बहुत आंसू बहाना, गर्द व गुबार गिरना दिन में सोना, रात में जागना, ज्यादः अर्से तक चित्त सोना, हायज़ा (रितुवती या रजस्वला स्त्री या पुश्पवती स्त्री) से जमाअ करना मोज़े पहन कर सोना, पानी में मुंह देखना, रातको आईना देखना, हुक़्क़ा पीना, बहुत ज्यादः पान खाना, मिट्टी के तेल की रोशनी में बैठना, तुलूअ (उदय) और ग़ुरूब [अस्त] आफ़ताब (सूर्य) के वक़्त या मुत ज़लज़ल (कंपायमान) या धुंदली रोशनी में पढ़ना लिखना, बारीक हुरूफ़ पर निगाह जमाना, धुआं लगना, अशयाय गर्म ज्यादः खाना आँख में पसीना गिरना, पसीने की हालत में न्हाना, बहुत जमाअ करना, ऊपर की डाढ़ को उखाड़ना, आंख में भाप लगना, बहुत बारीक चीज़ों को मुतवातिर (लगातार) वग़ैर देखना, नशीली चीज़ों का ज्यादः इस्तेमाल करना, किसी की दुखती आंखों को बहुत देखना, क़ै रोकना, बहुतक़ैकरनासरदर्दहोनाआग के सामने बहुत बैठना, तुलूअ व ग़ुरूब होते हुये सूरज को देखना, सूरज ग्रहण को देखना, सर पर गरम पानी डालना, पांव के तलवों को सेकना, या गर्म पानी से धोना, तपिश में से आकर फ़ौरन पानी में घुस जाना या न्हाना, ज्यादः खड़ाऊं पहनना, दूर की चीज़ों को बग़ौर देखना, पतली चीज़ों का ज्यादः खाना पीना, पायख़ाना व

व पेशाब की हाजत और रियाह (बाव) को रोकना, रंज व गुस्सा ज्यादह करना, खाकर फ़ौरन सो जाना, या भूका सोना, बार२ फ़स्द खुलवाना, गले में तंग आने वाला कपड़ा पहनना, टहलते हुये या चलती हुई गाड़ी पर कम रोशनी में पढ़ना, गुनूदगी (औंघ) के वक्त पढ़ना लिखना, शुआअ आफ़ताब (किरनें सूर्य की) आईने में से आंख में पहुंचना भौं पर हजामत बनवाना अन्दाम निहानी ज़नान (योनी (मूत्र स्थान) स्त्रियों की) देखना, वग़ैरह से ९६ अक़साम (भेद) अमराज़ चश्म में से कोई न कोई मरज़ पैदा हो जाता है।

मुफ़ीदचश्म. अस्बाब मज़कूरः बाला से हत्तुल इमकान (जहां तक हो सके) बचना किसी उम्दा सुर्मे या अंजन का रोज़ाना या दूसरे तीसरे ‡ दिन लगाना, सिर के बाल छोटे रखना नाख़ून कटवाना और साफ़ रखना कंघी करना, सरसों का तेल कानों में डालना और तालू पर मलना, सर में तेल डालना, मिर्च स्याह घी बूरा मिला कर खाना, मिसरी बादाम खाना, सब्ज़ चीज़ों को देखना, चांदनी में बैठना, सर्द पानी के या त्रिफले के पानी के छींटे आंखों को देना, दरया में घुस कर पानी के अन्दर बहाव के मुक़ाबले पर

---

‡ उमदा अंजन या सुर्मे को लगाना अगरचे हर हालत में हमेशा मुफ़ीद है ताहम ब पाबन्दी ज़ैल लगाना ज्यादः मुफ़ीद है [१] सुर्मा या अंजन हमेशा पहिले बाईं आंख में लगाओ (२) मौसम सर्मा में दोपहर को, गर्मी में सुबह को, बरसात में शाम को, और मौसिम बहार में हर वक्त (३) लगाने की सलाई बहतरीं सोने की या सोने के मुलम्मे की, इस से कम दर्जे चांदी की, इस से कम दर्जे जस्त की, और सब से कम दर्जे काठ की है (४) सूरत हाय ज़ैल में कोई सुर्मा या अंजन न लगाओ
[१] नये बुख़ार में (२) जुल्लाब में (३) क़ै के बाद फ़ौरन [४] एन सोते वक्त (५) सर से गुस्ल करके फ़ौरन (६) खाना खाकर फ़ौरन (७) पानी पीकर फ़ौरन (८) पायख़ाने से आकर फ़ौरन (९) हुक़्क़ा पीकर फ़ौरन (१०) मुनश्शी चीज़ें खाकर फ़ौरन (११) शिद्दत प्यास में (१२) व क़्त ख़ौफ़ व ख़तर [१३] पायख़ाने की ज्यादः हाजत में (१५) गुस्से के वक्त (१६) ज्यादः जागने के वक्त [१७] गर्मी में चल कर फ़ौरन (१८) जमाअ के बाद फ़ौरन (१९) ज्यादः गर्मी या ज्यादः सर्दी के वक्त [२०] ज्यादः अब्र में

आंखों का खोले रहना, गाहे गाहे (कभी २) किसी इतरीफल का या मुंडी में थकर सफ़ेद हम-वज़न मिलाकर खाते रहना, सौंफ़ कूट छान कर और मुसावी-उल-वज़न बूरा मिला कर एक तोला रोज़ सोते वक्त खाना, सोने की सलाई आंखों में फेरना, पांव के अगूंठे ख़ुसूसन पाख़ाने से आकर धोना नुक़रई (चाँदी का) थाल में या केले के पत्ते पर खाना खाना ॥

१- आशोब चश्म या रमद चश्म

(आखें आजाना या दुखना)

अलामात- आंख के १ पर्दए मुलतहिमा (बेरूनी सफ़ेद पर्दा चश्म) में सुर्ख़ी, वर्म, सोज़िश और दर्द का होना ॥

असबाब— मज़कूरा (उपरोक्त, ऊपर कहे हुए)

इलाज- बाद तीन रोज़ के जिस आंख में सुर्ख़ी हो उस से दूसरी तरफ़ के पांव के नाख़ूनों में अनमोल बूटी का दूध लगाएँ और भरें अगर बरगद का दूध भी आँख पर लगाएँ, या अर्क़ चौखार या एक माशे फिटकरी को पीस कर एक तोला पानी में मिला कर अन्दर टपकाएँ तो और भी मुफ़ीद है।

परहेज़. गोश्त, नमक, व मिर्च सुर्ख़ व खटाई, आचार व अजवायन व पान खाना, व शराब पीना, दूध पीकर सोना, ज्यादह पानी पीना इब्तिदा में सर्द पानी आंख पर लगाना, सर पर ज्यादह पानी डालना, शबनम में सोना, तेज़ ख़ुशबू सूंघना वरज़िश करना तैरना व दौड़ना, आईना देखना, सवारी पर ज्याद: चढ़ना ज्याद: बोझ उठाना जमाअ करना, दिन में सोना, सुई का काम करना, पढ़ना लिखना, हुक्का पीना, आग या चिराग की तरफ़ या और चमकीली चीज़ों की तरफ़ देखना क़ाबिज़ ग़िज़ा खाना छींकना, क़ै करना।

२- ज़ोफ़ बसर (धुंध)

अलामात- कम दिखाई देना धुंधला नज़र आना, बारीक चीज़ें न दीखना)।

असबाब. मज़कूरा (अमराज चश्म के ज़ैल में) ॥

नोट- ज़ोफ़ बिसारत का मर्ज़ जो बवजह ज़ईफ़ुलउमरी के होता है वह अगरचे क़रीबन लाइलाज है ताहम इस इलाज से न सिर्फ़ बढ़ना ही रुकेगा बल्कि कुछ न कुछ कम भी ज़रूर पड़ जायगा ॥

---

१ आंख का सुफ़ेद भाग काली पुतली के इर्द गिर्द।

इलाज. अनमोल बूटी के दूध में धुनी हुई रुई को मुकर्रर तर करके साये में सुखाएँ और बत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पाड़ कर और नीम की लकड़ी के डंडे में पैसा जमा कर फूल के कटोरे में गुलाब के साथ सात रोज़ खरल करें और सलाई से आंखों में लगाया करें और बालों में रोज़ाना कई बार कंघी किया करें ॥

परहेज़. अशयाय गर्म व तुर्श व कसरत जमाअ व दीगर अस्बाब अमराज़ चश्म, मसूर सुर्फ़ेका साग चूका, काहू, चिरचिड़ा, गंदना धूप खाना आग के क़रीब बैठना, चमक दार शै की तरफ़ बहुत देखना ॥

३- दमआ (ढलका)

अलामात. आंखों से खिलाफ़स्द आंसू बहना और हर वक्त तर रहना

अस्बाब [१] मज़कूरह

इलाज. धुनी हुई रुई की तीन बत्तियां बनाकर उन्हें अव्वल धतूरे के रस में मुकर्रर तर करके साये में सुखालें, फिर अनमोल बूटी के दूध में तीन बार तर करके साये में खुश्क करें, फिर रेंडी के तेल से काजल पार कर और उसमें क़द्रे घी, भुनी हुई फिटकरी और तूतिया मिला कर रख छोड़ें और लगाते रहें, चांदी की सलाई से लगाना और भी अच्छा है ॥

परहेज़. अस्बाब अमराज़ चश्म से बचें ॥

४-सुलाक़ चश्म (बाम्हनी)

अलामात. पलकों का ग़लीज़ हो जाना, मय ख़ारिश व खुश्की से पलकों के बाल गिरना।

अस्बाब. मज़कूरह (अमराज़ चश्म कीज़ैल में)

इलाज. अनमोल बूटी की जड़ जला कर राख को पानी में मिला कर आंख के गिर्द तिला करें।

दीगर अनमोल बूटी के दूध में रुई या पारचा साफ़ चार पांच बार तर करके साये में खुश्क करलें और घी या मीठे तेल में काजल पारलें और लगाते रहें।

परहेज़. अस्बाब अमराज़ चश्म मज़कूरह बाला से बचें।

५-नुज़ुलचश्म (मोतियाबिन्द)

अलामात. आंख में दमाग़ से

---

[१] सबब का बहुवचन, [illegible]

कम कम या दफ़ेतन नज़ले का पानी उतरना, आंख के ज़ेरीं बाल (बरूनी) का बाज़ओकात गिरना इस मर्ज़ में बिसारत रोज़ बरोज़ कम होती चली जाती है इब्तिदा में जब तक तख़य्युलात नज़र आवें या धुंध नज़र पड़े इलाज-पज़ीर(साध्य) है,ज्यादह दिन में क़रीबन लाइलाज (असाध्य) हो जाता है ॥

इलाज. अनमोल बूटी के दूध में रुई मुकर्रर तर करके साये में ख़ुश्क करलें और बत्ती बनाकर मीठे तेल से काजल पारलें, इस काजळ को लगायें चंद रोज़ में सेहत होगी ॥

परहेज. तुर्शी व बादी अशयाय (चीज़ें), और रोग़न स्याह (तेल) व दीगर अस्बाब अमराज़ चश्म मज़कूर: बाला और मछली व दूध व दही ॥

६. (१)सबल चश्म (फुल्ली व मांडा)

इलाज. अनमोल बूटी के फूल २ छटांक, अर्क मुंडी २ छटांक, और अर्क बर्ग मुट्टाव ताज़ा दो छटांक, को अर्क लीमूं कागज़ी में ख़ूब खरल करें, तीन चार योम में जब अर्क गाढ़ा होकर क़ाबिल गोली बनाने के हो जाय तब गोलियां बनाकर साये में ख़ुश्क कर रक्खें, और बवक्त ज़रूरत सीप में एक गोळी को ताज़ा पानी में कुछ देर घिस कर आंख में बतौर अंजन के लगाएँ हफ्ते (सप्ताह, ७ दिन) अशरे (१० दिन का समय) में बिलकुल सेहत हो जायगी ॥

१ फुल्ली व मांड के सिवाय उस रोग को भी कहते हैं जिसमें आंख की रगें लाल और भरी हुई हों आंख खुजलावे, और पानी निकले टेढ़ा बाल जोआंख के अन्दर पैदा होकर चुभता है ॥

७. बयाज चश्म [जाला]

इलाज. नुसख़ा सबल चश्म की गोली ताज़ा पानी में घिस कर लगाएँ ।

८, जुफरा (नाख़ुना)

अलामात. आंख के बड़े कोए में नाक की तरफ़से परद: मुलतहिमा पर एक गोश्त मायल ब सुर्ख़ी मिस्ल नाख़ुन के पैदा होता है जो इलाज न करने से आंख की स्याही को ढांप कर कुछ दिन में अन्धा कर देता है ॥

इलाज. (१) अनमोल बूटी की जड़ पानी में घिस कर लगाएँ चंद रोज़ में सेहत होगी ॥

(२) नुसख़ा सबल चश्म की

गोलियां ताज़ा पानी में घिस कर लगायें ॥

परेहज़ अस्बाब अमराज़ चश्म से हत्तुल इमकान (जहां तक हो सके) बचें ॥

९- हिक्का (ख़ारिश चश्म)

अलामातः- आंखों में ख़ारिश होना, बाज़ औक़ात सुर्ख़ी रहना, और कभी २ वर्म आना ॥

इलाज ‡ (१) सुलाफ़ चश्म के नुसख़े नं० १ को इस्तेमाल में लायें ख़ारिश व सुर्ख़ी व पलकों का फूलना इन सब को मुफ़ीद है॥

(२) नुज़ूल चश्म के नुसख़े में इतना और बढ़ायें कि रुई तर करते वक्त दूध में क़द्रे मिर्च स्याह, व लाहोरी नमक, बारीक पीस कर और मिलालें यह काजल ख़ारिश, व सुर्ख़ी वग़ैरः सब को मुफ़ीद है ॥

(३) अमराज़ गोश

असबाब- कान कुरेदना, चोट लगना, तोप वग़ैरः की आवाज़ सुन्ना, ख़ुश्की रहना तेज़ चरपरी चीजें खाना, किसी कीड़े का घुस आना, बलग़म की ज़्यादती बद हज़मी, बहुत शिकमसेर होकर (पेट भरकर) खाना, ख़ुसूसन, शिकमसेर होकर फ़ौरन सोजाना, मुतवातिर क़ै करना, मुनश्शी (माद्यक, नशीली) अशयाय पै-दर-पै खाना पीना, अब ख़रे पैदा करना बादी अशयाय खाना वग़ैरह ॥

मुफ़ीद गोश कान के जुमला अमराज़ से बचने के लिये चाहिये कि कानों में रुई लगा कर सोया करें, और कभी २ तेल कड़वा (सरसों का) डालते रहें, गिज़ाय लतीफ़ व तर खायें,(खाना हलका,) हफ्ते में एक बार रोग़न बादाम तल्ख़ कान में टपकाएँ ॥

वजअउल उज़ुन (दर्दगोश)

(कान)

अलामात कान में दर्द होना ॥

अस्बाब मज़कूरः (अमराज़ गोश की ज़ैल में)

इलाज (१) अनमोल बूटी का ज़र्द पत्ता नीम गर्म करके कान में

---

‡ हिक्कतुल अजफ़ान (पलकों की ख़ारिश) हिक्कतुल आनाक़ (ख़ारिश गोशए चश्म) इन्तिफ़ाख़ुलऐन (आंखफूलना) और हुमरतुलऐन (सुर्ख़ी चश्म) इन सब के लिये यह नुसख़े मुफ़ीद हैं ॥

निचोड़ें, कान के हर क़िस्म के दर्द को मुफ़ीद है ॥

(२) बर्ग अनमोल बूटी एक तोला में अर्क़ मूली व कड़वा तेल एक २ तोला मिला कर आग पर रक्खें, जब अर्क़ सब जल कर सिर्फ़ तेल रह जावे उतारलें यह तेल नीम गर्म ज़रा २ सा कान में चन्द बार डालें ॥

परहेज़ अस्बाब अमराज़ गोश से बचें ॥

२ तर्श (गिरानी गोश या ऊंचा सुनना)

अलामात आहिस्ता बोलने की आवाज़ न सुनना ॥

अस्बाब मज़कूरह ॥

इलाज अनमोल बूटी खुर्द मायल ब ज़र्दी का पत्ता कि नया निकला हो और सूराख़ दार न हो नीम गर्म करके अर्क़ कान में निचोड़ें और दो ढाई हफ़्ते तक यही अमल करें

परहेज़ अस्बाब मरज़ से बचें ॥

नोट बुक़रात का क़ौल है कि बहरे को अगर दस्त सफ़रावी दौरे से आयें तो वह बहरा जल्द अच्छा हो जावेगा ॥

४ अमराज़ दन्दां [दांत]

अस्बाब गर्म ग़िज़ा खाकर सर्द पानी पीना, सर्द व गर्म चीज़ एक साथ खाना, बर्फ़ व खटाई व मूंग ज़्यादा खाना, मुंह की राह सांस लेना, सर्द चीज़ें कि ख़ासियत में गर्म हों या गर्म चीज़ें कि ख़ासियत में सर्द हों खाना, खाने के बाद दांतों को बख़ूबी साफ़ न करना, सख़्त चीज़ें दांतों से तोड़ना, अंजीर चबाना ॥

मुफ़ीद [फ़ायदे मंद, गुणकारी] **दंदां** अस्बाब मज़कूरः को रोकना दांतोन करना मंजन लगाना खाना खाकर खूब कुल्ली करना क़द्रे [ज़रासा,] मरकचूर) हमेशः मुंह में रखना ।

मुक़व्वी [मज़बूतया दृढ़ करनेवाली,]

दंदां फिटकरी, हड़ का छिलका, सुपारी, अक़रक़रहा, ज़ीरा सरा तेज़ग, गुलाब ॥

मुज़िर [हानि कारक,] **दंदां** मूली बर्फ़ का पानी तुर्श अशया चूका ॥

वजय उल असनान (दर्द दंदां)

अलामात दांतों की जड़ों में दर्द होता है ॥

अस्बाब मज़कूरः [उपरोक्त,] [अमराज़ दन्दां के ज़ैल में]

इलाज अनमोल बूटी की जड़ का पोस्त एक माशे पानी में भिगो कर व अहतियात दुखते हुये दांतों पर रक्खें ॥

नोट यह इलाज किर्म खुर्दगी दन्दां को भी मुफ़ीद है ॥

परहेज जुमला अस्बाब अमराज़ दन्दां से हत्तुल इमकान [जहां तक हो सके] परहेज़ रक्खें ॥

५ अमराज़ सीना व दिल

अस्बाब गर्द व धुएं वग़ैरः का मुंह व नाक में जाना सर्द पानी से ज्यादः न्हाना जुकाम व खांसी में बद परहेज़ी करना सीना दबा कर झुक कर बैठना सर्द अग़ज़िया [का ज्यादः खाना ग़िज़ा का बहु बचन आहार] पीना नज़ले का गिरना वग़ैरः ॥

१ ज़ीकुल नफ़स व रबू (सांस या दमा)

अलामात सांस के मुश्किल से आने को ज़ीकुल नफ़्स और मुत वातिर जल्दी २ आने को रबू कहते हैं । यह मरज़ अकसर बुढ़ापे में कसरत बलग़म से हादिस [पैदा] होता है और जल्द बढ़ कर ला इलाज हो जाने वाले अमराज़ में से है

अस्बाब यह मरज़ गर्द व धुआं मुँह व नाक में जाने, ज्यादः राह चलने, हाजत पेशाब व पाख़ाना रोकने, सर्द पानी से ज्यादः न्हाने, सर्द पानी पीने व सर्द गिज़ा खाने, गर्म हवा में घूमने, ज्यादः बोझ उठाने, जुकाम व खांसी में बद परहेज़ी ज्यादः करने वगैरः से हो जाता है

इलाज (१) अनमोल बूटी के सात पत्तों पर कत्था सुर्ख पानी में तर करके एक जानिब लगाएँ और दीगर (दूसरे) सात पत्तों पर घी एक तरफ़ लगाए । फिर सब को इस तरह कि एक बर्ग कत्थे पर [कत्था लगा पत्ता] एक बर्ग रोग़न तिह-ब-तिह (तिह के ऊपर तिह) रख कर और गिले हिकमत (कपरोटी) में जला कर सफूफ़ बना रक्खें और पान बंगले में एक रत्ती से तीन रत्ती तक रख कर खाते रहें बराय ज़ीकुल नफ़्स रतूबी निहायत ही क़वी उल असर है ॥

[२] मौसिम सर्मा में अनमोल बूटी की निस्फ (आधी) कौंपल को बड़े पान में जिस में मामूला मसाला भी लगा हो रख कर खाएँ और आधी आधी कौंपल बढ़ा कर तीन कौंपल तक पहुंच

कर फिर उसी क़दर चालीस दिन तक खाएँ ॥

(३) अनमोल बूटी के एक पत्ते में पच्चीस मिर्च स्याह खूब पीस कर ब क़दर मिर्च स्याह गोलियां बना रक्खें; जवान आदमी शबा रोज़(रात दिन) में सात गोलियां और लड़का सिर्फ़ दो गोलियां रोज़ खाया करे ॥

(४) अनमोल बूटी की पत्तियां कि ज़र्द होकर दरख़्त से गिर गई हैं एक सेर लेकर उनपर चूना व नमक हर एक सात २ माशे को पानी में पीस कर लगाएँ, खुश्क होनेपर मिट्टी के बर्तन में रख कर जंगली कंडों की आग में ३ घंटे तक ख़ूब जलाएँ। जब राख होजाय सफूफ़ (चूर्ण) बना कर एक रत्ती रोज़ पान में खालिया करें ॥

(५) अनमोल बूटीकी मुंहबन्द कली व मिर्च स्याह व नमक सेंधा हम-वज़न (बराबर वज़न) बारीक पीसकर चनेकी बराबर गोलियां ‡ बनारक्खें और एक गोली रोज़ खाते रहें॥

(६) अनमोल बूटीकी बन्द कली दो तोले व अजवायन एक तोला बारीक पीस कर और शकर सफ़ेद (बूरा) डेढ़ तोले मिला कर * रख लें जाड़ों में पांच माशे रोज और गर्मियोंमें तीन माशे रोज निहार मुंह खाएं ॥

(७) अनमोल बूटी की बन्द कली २ तोले, पीपल १तोला, नमक लाहा-री एक तोला बारीक पीसकर जंग-ली बेर की बराबर गोलियां बना रक्खें और एक गोली रोज खाएँ ॥

(८) अनमोल बूटी की बन्द क-लियां लेकर हर एक कली में ३ का-ली मिर्च रख कर मिट्टी की कोरी हंडियामें रक्खें और ऊपर से खारी नमक ब मिक़दार मुनासिब बिछा कर हांडी का मुंह बन्द करके तन्नूर, या भट्टी में रक्खें बाद सर्द होनेके निकालकर सफूफ़ (चूर्ण) बना रक्खें और चार रत्ती रोज़ खाया करें ॥

(९) अनमोल बूटी की कली की जड़ ३ तोले और अजवायन २ तोले कूट छान कर गुड़ में गोलियां बना रक्खें और एक गोली हर सुबह को खाया करें ॥

(१०) अनमोल बूटी की छाल व सहँजने की छाल हर एक ३ माशे

‡ यह गोलियां खांसी व बुख़ार व बद हज़मी व दर्द शिकम (पेट) इमतिळाई (भरा हुवा आहार से) व सख़्ती तिहाल (तिल्ली) के लिये भी मुफ़ीद है ॥

* यह सफूफ़ खांसी व बाव गोला व सूल शिकम को भी अज़बस (बहुत) मुफ़ीद है ॥

जवाखार एक माशे, पीपल १ माशे, तूतिया सब्ज़ बिरियां दोरत्ती इनका सफ़ूफ़ बनाकर तीन रत्ती रोज़ खाएँ ॥

(११) अनमोल बूटीके दूधमें चार तोले गेहूं किसी पत्थर या कांच के बरतन में तीन रोज़ भिगो कर और फिर मिट्टी के कोरे बरतनमें रख कर मुंह बन्द करके जंगली कंडों में जलाएँ जब सर्द हो जाय बारीक पीस कर और चार तोले गुड़ मिला कर दो दाम आलमगीरी * की बराबर गोलियां बना रक्खें और एक गोली रोज ब वक्त सुबह खालिया करें ॥

(१२) अनमोल बूटी के दूधमें अजवायन मुकर्रर (दो बार) तर करके साये में सुखा लें ‡ और वक़्तन फ़वक़्तन (कभी कभी) खाते रहें ॥

(१३) अनमोल बूटी के पत्ते खुश्क करके जला कर राख को रात भर पानी में भिगोएँ सुबह को पानी नितार कर आग पर जलाएँ कि पानी सब जल कर नमक हो जाय इस नमक को खाया करें ॥

(१४) अनमोल बूटी के फूल का ज़ीरा २ तोले, लौंग एक तोला, जायफ़ल एक तोला, सौंठ ६ माशे, ज़ाफ़रान ४ माशे, सब को पान के रस में बारीक पीस कर उर्द की बराबर गोलियां बना कर इस्तेमाल करें ॥

(१५) अनमोल बूटीके २५ पत्तों पर कि ज़र्द हो गये हों अजवायन देसी २ तोले व नमक खारी २ तोले पानी में घिस कर लगावें और तह ब तह रख कर जब खुश्क हो जावें एक कोरे गिली (मिट्टी का) बरतन में रख कर गिले हिकमत करके इस तरकीब से ख़ाक करें कि एक हाथ लम्बा चौड़ा गहरा गढ़ा खोद कर निस्फ़ को आरने उपलों से भरें और दवा के बर्तन को रख कर बाक़ी हिस्सेमें भी उपले भरदें और आग लगाएँ जब सब जलकर सर्द हो जाय निकाल कर सफ़ूफ़ बना रक्खें और हस्ब ज़रूरत वक़्तनफ़वक़्तन (कभी-कभी) मुंह में रक्खें ॥

(१६) * सुफ़ेद फूलकी अनमोलबूटी की शाख़ व फूल व लकड़ी सबको साये में खुश्क करके पीस कर १ माशे रोज़ हमराह गाय या बकरी के दूध ताज़ा के खाया करें और अगर फिटकरी के पानी में तसक़िया (पानी

---

*दामआलमगीरी=क़रीबननिस्फ़माशा।

‡ यह अजवायन खांसी बलग़मी को भी बहुत मुफ़ीद है ॥

* यह सफ़ूफ़ इसी तरकीबसे खाने से पुरानी बलग़मी खांसी को भी बहुत जल्द खो देता है और ज़ोफ़ बदन तप कुहना बलग़मी चौथैया के दूर करने और तहलील नफ़ख़ के लिये भी अजीबुल असर है ॥

में तर कर के साये में सुखाया हुआ) कर के इस्तैमाल करें तो नाफ़ैतर (अधिक गुणकारक) है ॥

(११) अनमोल बूटी के पत्ते, मुरमकी, कत्था सुफ़ैद, सबको पानी में पीस कर किसी कोरे मिट्टी के बर्तन में तिला (पतला लेप) करें और मुरमकी बँधी उस मिट्टी के बर्तन में रख कर और बर्तन का मुंह बन्द करके जलतेहुए चूल्हे या तनूर या भट्टी में रक्खें जब जलकर राख हो जाय पीस कर एक रत्ती रोज़ पान में रख कर खाया करें। सानक को भी मुफ़ीद है ॥

परहेज़— दूध, दही, तुर्शी, गिज़ाय बादी खाना, मेवेजात या अशयाय रोग़नी पर पानी पीना, व अस्बाब मरज़से बचना ॥

२ सुआल व सुर्फा (खांसी)

अलामात— बार २ खांसना, बलग़मी खांसीमें खाँसनेके साथ बलग़म भी निकलता है इसलिये इसे सुआल यानी तर खांसी कहते हैं मगर सुर्फा यानी ख़ुश्क खांसी में बलग़म नहीं निकलता इसलिये इस में किसी क़दर ज़ियादः तकलीफ मालूम होती है। सीने पर ख़फ़ीफ़ (हलका) दर्द और गले में ख़राश सी रहती हैं ॥

अस्बाब— यह मर्ज़ नाक व मुंह में धुवां या गर्द ग़ुबार जाने, रूखी चीज़ें मुतवातिर खाने, चिकनाई पर और अकसर मेवेजात तर मूली वग़ैरः पर और बाद के पानी पीने, हाजत पाख़ाना व पेशाब रोकने, छींक रोकने, ज़यादः सर्द चीज़ें खाने पीने वग़ैरः से हो जाता है ॥

इलाज— जो कुल नफ़्सके तमाम मुरक्के जात ख़ुसूसन (मुख्य कर) ५, ६, १२, १६, मुफ़ीद हैं ॥

परहेज़— दही व अस्बाब मज़कूरह से परहेज़ करें ॥

३ ज़ातउलजन्ब (दर्दपसली)

अलामात व अस्बाब— जो दर्द कि रीह और सर्दी से होता है उसकी अलामात इन्तिक़ाल (बदलना) करना दर्द का एक जगह से दूसरी जगह और नीज़ (भी) तप का न होना है, वरना अक्सर तप व खाँसी भी होती है ॥

इलाज— (१) अनमोल बूटी की जड़ लड़के के पेशाब में घिसकर दर्द के मुक़ाम पर लगा कर धूप में बैठें और जंगली कण्डोंकी नर्म आग से सेंक करें। दर्द पसली को कि बिला तप हो फ़ायदा करे ॥

(२) रोग़न संखिया की मालिश करके बर्ग अनमोल बूटी सेंक कर बाँधें ॥

(३) अनमोलबूटीकी ताज़ा जड़ चार हिस्से और लोटन सज्जी एक हिस्से को तिफ़्ल खुर्द साला (छोटा बच्चा) के पेशाबमें पीसकर मुक़ाम हूक पर नीम गर्म (कुछ गर्म) गाढ़ा लेप करें और क़रीबन एक घंटे बाद जंगली कंडों की आग से सेंकें या धूपमें थोड़ी देर बैठें। दर्द पस्ली के लिये यह इलाज सब से उम्दा है ॥

परहेज़— सर्द पानी पीना , जमाअ (स्त्री प्रसंग) करना , धुएं में रहना ॥

६—अमराज़ शिकम (पेट) *

अस्बाब— सक़ील (देर में हज़म होने वाली) या मुतज़ाद (विरुद्ध) ग़िज़ा (आहार या भोजन) खाना पीना , बे वक्त खाना , ज्यादा खाना , बार २ कुछ खाते रहना खाकर फ़ौरन (तुरन्त) दमाग़ी या जिस्मानी (शारीरिक) महनत करना, नहाना या जमाअ करना या उछलना कूदना कसरत (बहुत) इस्तेमाल ग़िज़ाय रोग़नी ॥

मुज़िरात (हानिकारक) **मेदा**— तिल, मसूर, अदरक, अंजीर, अंगूर ख़ाम (कच्चा) , पनीर, गर्म पानी, रोग़न गाव, शीरीनी ॥

१—सुइ-उल-क़िन्नियह व इस्तिस्क़ा (जलन्धर)

अलामात— तमाम आज़ाय(अंगो पांग)ज़ाहिरी खुसूसन चर्बीमें वरम हो जाता है (इसको इस्तिस्क़ाय लहमी कहते हैं) या पेट बढ़ जाता और नाफ़ (नाभि) निकल आती है और पेट पर हाथ मारने से तब्ल (नक़्क़ारा) की सी आवाज़ होती है (इसको इस्तिस्क़ाय तब्ली कहते हैं) या जिल्द (खाल) भारी और पेट मानिन्द भरी हुई मशक के महसूस (ज्ञात) होता है (इसको इस्तिस्क़ाय ज़िक्की कहते हैं ॥

अस्बाब— यह मर्ज़ बाद रियाज़त (मिहनत या कसरत या वर्ज़िश)

---

* बद हज़मी व हैज़ा व जलन्धर वग़ैरः जुम्ला (सब) अमराज़ शिकम व बुख़ार , खाँसी वग़ैरः जुम्ला दीगर अमराज़ से बचना हो तो रिसालः " हफ़्त-जवाहर " जिल्द अव्वल व दोम व सोम के तिब्ब (वैद्यक) के कालमों को मुलाहिज़ा फ़रमाइये जिसमें सैकड़ों लटके जुम्ला बीमारियों से महफ़ूज़ (बचा हुवा या रक्षित) रहने के दर्ज हैं ॥

या चिकनाई खा कर या क़ै कर के या जुलाब में ठंडा पानी पी लेने से या ज़ियादा भूकमें पानी से पेट भर लेने से जौफ़ (कमज़ोरी) जिगर, जौफ़ मेदा, जौफ़ तिहाल (तिल्ली) या बदहज़मी से आरिज़ (पैदा) हो जाताहै ॥

इलाज — (१) अनमोल बूटी के ताज़ा पत्ते पावसेर बारीक पीसकर और डेढ़ तोले हल्दी पिसी हुई मिला कर फिर खूब पीस कर आमेज़ (सम्मिलित)करें और उर्दकी बराबर गोलियां बना रक्खें। एक गोली से शुरू कर के रोज़ाना एक बढ़ाकर सात गोळीतक हमराह आब (पानी) ताज़ा खाएँ और फिर उसी क़द्र रोज़ाना खाते रहें। इस्तिस्क़ाय लहमी को बहुत जल्द सेहत कुल्ली होगी। यह बे नज़ीर इलाज है॥

(२) फ़ालिज व लक़वे के नुस्खे नं० १ की गोलियाँ चार से सात तक बढ़ा कर खाऐं ॥

परहेज- ठंडा पानी पीना बजाय पानी के अर्क़ मकोय या अर्क़ कासनी या अर्क़ बादयान (सोंफ़) या अर्क़ बारतंग या अर्क़ तेजपात, या ज़्याद:प्यास लगने पर जोश दियेहुये पानी को ठंडा करके क़द्रे२ (थोड़ा२) दें नहाना (अगर नहाने की हाजत हो तो खारी नमक पिसा हुआ पानी में मिला कर और धूप में रख कर निहलावें, समुद्र के पानी से गुस्ल (न्हाना) कराऐं तो और भी अच्छा है) सर्द हवा लगना, इन से बचावें, जौ मुक़श्शर (छिलका उतारा हुआ) या निस्फ़ (आधा) जौ और निस्फ़ गेहूं के मिले हुये आटे की रोटी खिलाना और इस क़द्र रियाज़त (महनत या कसरत या व्यायाम) करना कि बदनसे खूब पसीना निकले मुफ़ीद है॥

२–तिहाल(तिल्ली)

अलामात. तिहाल एक अज़्व (अंग) बदन का नाम है जो मेदे के बाँई जानिब दिल के नीचे मसामदार (बारीक सूराख़दार) स्याह मायळ व सुर्ख़ी मुहद्दब (बीच में उभरा हुआ) शक्ल का होता है यह अज़्व सबके शिकम में होता है मगर इसका बढ़ जाना बीमारी है जब तिल्ली बढ़ जाती है तो शिकम भारी और सख़्त हो जाता है, हाथ पांव दुबले, रंग जिस्म का फीका, भूख कम, लाग़री(दुबलापन) जौफ़ (कमज़ोरी) तिल्ली पर वर्म और दर्द वग़ैरा अलामात (चिन्ह) ज़ाहिर होती हैं॥

अस्बाब-बुख़ार, बदहज़मी, ख़सूसियत मलेरिया वग़ैरह ॥

इलाज-शीर अनमोल बूटी, शीर

तिधारा, बिरंज बिरयां (भुनेचावल) हर एक यक तोला, हींग तीन माशे सब को बारीक पीस कर मटर की बराबर गोलियां बनालें और चूना यक मुश्त (मुट्ठी भर) क़रीबन आध सेर पानी में तर करके उसका आब ज़ुलाल (निथरा हुआ पानी) लेकर बोतळ में रक्खें और उस में नमक स्याह एक छटाँक हल करके रख छोडें, ब वक्त सुबह एक गोली मज़कूर (उपरोक्त) खाकर निस्फ़ छटाँक अर्क़ मज़कूर पीवें तीन दिन मुतवातिर इस्तेमाळ करें, ग़िज़ा मुलैयन खाऐं और तिल्ली को दबाकर दस पन्द्रह मिनट करवट से लेटाभी करें ॥

परहेज.दाईं करवट सोना, खड़े से पानी पीना, दूध इमली वग़ैरा ॥

३.यरकान (कंवल बाव)

अलामात.आँखों में ज़र्दी या बाज़औक़ात ज़्यादः स्याही, सुस्ती, कभी कभी जी मिचलाना, कमी इशतिहा (भूख), पेशाब व पाख़ाना ज़र्दी मायल, खाल पर ख़ुशकी, ज़्यादः प्यास वग़ैरहः ॥

अस्बाब-जारी होना सफ़रा या सौदा बेउफ़ूनत (बद बू दुरगंधी) का जिल्द (खाल)की तरफ़, अगर सफ़रा (पित्त) से हो तो उसे यर्क़ान असफ़र और सौदा (बात) से हो तो यर्क़ान असवद् कहते हैं और जिसमें उफ़ूनत हो उसमें तप लाज़िम है यरक़ान असफ़र वर्म तिहाल (तिल्ली) से और असवद् वर्म जिगर से होता है दीगर अस्बाब कसरत शराबख़ोरी, ज़्यादः सोना, बुख़ार में ज़्यादः गर्म अशया खाना पित्त ज़्यादः जमा होना, मिट्टी खाना वग़ैरा ॥

इलाज.अन्मोल बूटी (आक) की टीमनी यानी फुलक के सब से छोटे पत्ते पान में रखकर ब वक्त सुबह तीन योम या एक हफ़्ते खाऐं और बिन्दाल रात को पानी में भिगोकर सुबह को साफ़ पानी उस का दो तीन क़तरे नाक में टपकाऐं या कंवल गट्टा मय छिलके के बारीक कूट कर उसका नास बवक्त सुबह लें। दो चार योम (दिन) में सेहत होगी और ग़िज़ा दाल मूंग व चावल खाऐं (अर्क़ लीमूं आंख में टपकाना उस ज़र्दी के लिये मुफ़ीद है जो बाद दफ़ै (दूर होना) यरक़ान आंख में बाक़ी रहजावे ।)

मुफीद यरकान कहरुबा लटकाना ज़र्द कपड़े पहनना, बकरी का दूध पीना, चने की रोटी बिला नमक खाना ॥

परहेज. अशयाय तुर्श व बादी

गोश्त, हल्दी, शराब नमक वग़ैरह॥

४. सूउल मिज़ाज व सूउल हज़्म (बदहज़मी व कब्ज दायमी)

अलामात. जो ग़िज़ा खाई जावे वह हज़्म न हो या देर में हज़्म हो शिकम (पेट) भारी व सख़्त रहे, जैसी ग़िज़ा खाई जावे उसी के ज़ायक़े (स्वाद) की या खट्टी डकारें आवें, अफरा रहे जिर्यान (प्रमेह) हो, दस्त साफ़ होकर न आवे, खानेकी तरफ़ रग़बत (रुचि) कम हो वग़ैरह ॥

अस्बाब. यह मर्ज़ ज़्यादह पानी पीने, ज़्यादह खाने, बे वक़्त खाने, पाख़ाना व पेशाब की हाजत रोकने, दिनमें सोने, बहुत जल्दी खाने, रात को ज़्यादह जागने, सक़ील(भारी देरमें पचनेवाली)ग़िज़ा खाने, पायख़ाने से आकर फ़ौरन खाने पर बैठ जाने, खा कर बैठा रहने, या फ़ौरन सख़्त मिहनत करने या फ़ौरन सो जाने ऊंचे नीचे में बैठ कर खाने और हसद (डाह) व बुग़्ज़ (अदावत, शत्रुता) व गुस्सा व रंज व ख़ौफ़ व तमय(लालच व लोभ) व फ़रेब व तफ़क्कुरात (चिन्ता) में दिल पड़ा रहने से पैदा हो जाता है ॥

इलाज. (१) अनमोल बूटी की कली, अजवायन, करफ़स, नमकसेंधा मुसावी उल वज़न (तोल में बराबर) लेकर अदरक के अर्क़ में गोलियां चने की बराबर बनाऐं और इस्तेमाल करें ॥

(२) ज़ीक़ुलनफ़्स के नुस्ख़े नं० ५, ६, ७, ८, १२, १५, १६ मुफ़ीद हैं ॥

(३) हैज़े के नुस्ख़े नं० ४, ६ की गोलियां बाद तुआम कभी २ खाऐं ॥

परहेज. अस्बाब मज़कूरा बाला ग़िज़ाय रोग़नी (सचिक्कन अहार) वग़ैरह काफ़ी भूक खाना व पीना बदन पर तेल मलना ॥

मुफ़ीद. बाद खाना खाने के डेढ़सौ दो सौ क़दम टहलना, बाईं करवट लेटना, खाते वक़्त तबीअत यकसू (एकाग्र) और दिल खुश रखना खाने से क़ब्ल हाथ और पांव दोनों बख़ूबी धो लेना, अलस्सुबह (सूर्योदय से पहले) निहार मुंह एक गिळास बासी पानी रोज़ाना पीना

५. हैज़ा

अलामात. इस मर्ज़ में मवाद फ़ासिद (हानि कारक) ग़ैर मुन्हज़िमा (बे पचा हुआ) मेदे (अहार पचाने वाला अंग) में आकर क़ै और दस्त की राह निकलता है, बाज़ औक़ात (कभी २) तमाम माद्दा बिला क़ै के सिर्फ़ दस्तों की

राह ही निकलता है तो भी मितली से ख़ाली नहीं होता, पेशाब बन्द हो जाता है, प्यास ज़्यादह लगती है आंखें घुस जाती हैं गाल पचक जाते हैं बेचैनी व तशन्नुज ऐंठा(अंगों की ऐंठन) होंठ सफ़ेद, नब्ज़ सुस्त या बन्द, जिस्म सर्द, सांस ठंडा दर्द शिकम,जम्हाई, सर दर्द,जांघों में दर्द वग़ैरह होते हैं अगर तप लाहिक़ हो तो फ़िसाद मेदा समझें हैज़ा नहीं है ॥

असबाब. यह मर्ज़ अक्सर बदहज़्मी बढ़ने से आब हवा (जल वायू) ख़राब हो जाने से मैला कपड़ा पहनने व बदन नापाक(अशुद्ध)रखने से केला दूध एक वक़्त में खा लेने से तपिश आफ़ताब (सूर्यकी गर्मी) की शिद्दत से सर्द मेवेजात मिस्ल ककड़ी खीरा तरबूज़ वग़ैरह बकसरत खाने से अय्याम (दिन का बहुवचन) हैज़े में तेज़ मुस्हिल (जुलाब) के लेने से हो जाता है ॥

इलाज(१) अनमोल बूटीकी मुंह बन्द कली ३छटांक शामको मँगा कर रातभर रख छोड़ें सुबह को हावन दस्ते में खूब कूटें कि मिस्ल लुगदी केहो जावे इसमें मिर्च स्याह आध पाव और नमक स्याह एक छटांक खूब बारीक पीस कर मिलावें और फिर दुबारा खूब कूटें कि सब मिल कर मिस्ल मोम के हो जावे, ब मि-क़दार हाई २ रत्ती के गोलियाँ बना रक्खें, ब वक़्त ज़रूरत जवान मरीज़ को दो गोलियां वरना हस्ब उम्र दें और ऊपर से अर्क़ ज़ैलमिस्फ़ छटांक एक डली बर्फ़ के साथ पिलावें और जहां बर्फ़ मुयस्सर न हो। सर्द पानी उसके बजाय लें और जब २ मरीज़ पानी तलब करे वही पानी दिया करें और अर्क़ देना बन्द न करें ब-राबर बर्फ़ मिला मिला कर देते रहें यह याद रहे कि गोली सिर्फ़ अव्वल ही दी जाती है फिर नहीं अगर क़े के साथ निकल जावे तो दोबारा भी दें । क़ै बन्द होने पर अर्क़ देना भी बन्द करदें ॥

नुसख़ा अर्क़-मिर्च स्याह ८ माशे इलायची कलां १ तोला ज़ीरा स्याह व तेजपात व लोंग हर एक चार माशे पानी एक सेर में डाल कर एक घंटे तक जोश देकर छानलें ॥

(२) अनमोल बूटी की जड़ की छाल व मिर्च स्याह हमवज़न लेकर अद-रक के पानी में बख़ूबी पीसकर चने की बराबर गोलियां बना रक्खें और मरीज़ को एक २ गोली तीसर घंटेके वक़्फ़े से दें तीन चार बार के खिलाने से बिलकुल सेहत होगी निहायत क़बीउल असर है ॥

(३) अनमोलबूटी की मुंहबन्द कली ६ तोले, मिर्च स्याह ३ तोले, नमक लाहोरी ३ तोले, लोंग गुलदार ९ माशे नौसादर ‡ तसईदह ९ माशे

‡ तसईद- किसी तर या खुश्क दवा का जौहर उड़ाना ॥

तर्कीब नौसादर तसईदा-मिट्टी के

चूना आब-ना-रसीदा (बिनुभा) ३ माशे, अफ़यून डेढ़ माशे, इन को

ज़मीमा नोट दफ़ा २५

दो यकसां प्याले बराबर मुंह के ले कर इनके किनारों को किसी पत्थर पर ऐसा रगड़ो कि हमवार होकर दोनों बाहम पैवस्त हो सकें, बाद्‌ह नौसादर को पीस कर एक प्याले में डाल दो और दूसरे प्याले को ऊपर जमा कर मुलतानी मिट्टी से लेस कर गिले हिकमत करदो कि अंदर हवा न जासके फिर नीचे वाले प्याले को कोयलों की तेज़ आग पर रक्खो और ऊपर वाले प्याले के पैंदे पर जो बाक़ाइद जानिब है पानी से भीगा हुआ कपड़ा रखो और जब जब यह कपड़ा गर्म हो जाय फिर ठंडे पानी से तर करदो इस तरह क़रीबन पाव या आध घंटे में जौहर उड़कर ऊपर के प्याले में आ लगेगा, ठंडा होने पर ऊपर के प्याले से उसे उतार लो, यही जौहर है ॥

नोट-(१)इसी तरकीबसे दीगर उप धातु गंधक, पारा; हरताल, शिंगरफ़ संखया, मुरदारसंग, रसकपूर और दाल चिकना के भी जौहर उड़ाये जा सकते हैं ।

नोट-(२) जौहर ज्यादह उमदा और साफ़ लेने के लिये तरकीब मज़कूराको मुकर्रर भी अक्सर किया करते हैं यानी एक बार जौहर उड़ा कर फिर उसी तरकीब से उसका जौहर उड़ाते हैं और शिंगरफ़ को लुआब घीग्वार और अर्क़ केले के साथ खरल करके हरताल को बर्ग अनार तुर्श के पानी से खरल करके पारे को तेज़ाब नमक में या अर्क़ अंगूर तुर्श और रतन जोत में खरल करके गंधक को नौसादर और बुरादा आहन से मिलाकर संख्या को प्याज़ या अर्क़ हुरतल में खरल कर के इनका जौहर निकालते हैं तो यह उम्दा होता है ॥

अदरक के पानी में बारीक पीसकर खुश्क करें और फिर काग़ज़ी लीमूं के अर्क़ में खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनालें, दस ग्यारह बरस के लड़के को एक गोली और जवान आदमी‡ को दो या तीन गोलियां दें ॥ प्यास की शिद्दत हो तो गोली खाने के बाद पानी में गुलाब मिला कर पिलाएं, अगर ज़िन्दगी है तो ज़रूर सेहत हो जायगी और जिस क़दर रद्दी अलामात इस मर्ज़ में पैदा होती हैं वह सब रफ़ै हो जायंगी ॥

(४) फ़ालिज व लक़वा के नुस्ख़े नं० १ की गोलियों में से दो दो गोलियां चन्द बार दें ॥

‡ (५) वेख़ अनमोल बूटी (आक

---

‡यह दोनों नुस्ख़े, गिरानी शिकम व हज़्म तुआम के लिये भी अज़बस मुफ़ीद हैं ॥

की जड़) सौंफ़, हल्दी, चूना, मिर्च सुर्ख़ हमवज़न लेकर पीस कर बेर सहराई (जंगली) की बराबर गोलियां बना कर एक गोली खिलाऐं फ़ौरन आराम हो ॥

(६) गुल अन्मोल बूटी (आक) तर ८ जुज़, नमक लाहोरी व नमक स्याह व मिर्च स्याह हर एक दो जुज़, अदरक (या सोंठ) १ जुज़, बाहम पीस कर बिला आमेज़िश आब (बिना पानी मिलाऐ) बक़दर कुनार दरख़्ती (जंगली बेर) गोलियां बनाऐं और मरीज़ को दो २ घंटे के वक़्फ़े से हस्ब ज़रूरत तीन चार बार एक २ गोली दें, बफ़ज़लहू (परमात्मा की कृपा से) सेहत होगी ।

(७) पोस्तबेख़ अनमोल बूटी ६ माशे को पाव सेर डेढ़ पाव पानी में जोश देकर छान कर पिलाऐं ॥

(८) बेख़ कटाई ख़ुर्द चार अंगुश्त तवील, बेख़ अन्मोलबूटी की तूल व अर्ज़ में बक़दर अंगुश्त बिनसर (तीसरी उंगली) हो, गिरह चोब नीब, सींक नीब २१ अदद व मिर्च स्याह २१ अदद, सबको डेढ़ छटांक ताज़ा पानी में पीस कर मिलाऐं, तमाम दिन आब व ग़िज़ा कुछ न दें । अगर मर्ज़ दफ़ै न हो तो दुबारा पिलाऐं॥

नोटः— मिर्च सुर्ख़ का बीज एक अदद मोम में गोली बनाकर खाना अक्सीर का हुक्म रखता है ॥

परहेज--पानी पीना इसके एवज़ अर्क़ गुलाब या अर्क़ पोदीना बर्फ़ से सर्द करके या जंगली कंडों कोराख पानी में घोलकर जब नीचे बैठ जाय तो पानी को निथार कर छानकर पिलाऐं नरकचूर को जोश देकर पिलाना इस मर्ज़ में अकसीर का हुक्म रखता है खरबूज़ा व अमरूद व खीरा वग़ैरा खाना, दूध पीना, मरतूब मुक़ाम पर रहना, जल्द क़ै व दस्त रोकना, मरीज़ को ज़्यादह हरकत देना, घी खाना

वजअ नफ्ख मैदा
(दर्द मैदा व अफारा)

अलामात-तुर्श डकारें, हिचकी और हेजान दर्द का, बाद क़रार पाने तुआम केबाईं जानिब बालाय तिहाल (ऊपर तिल्ली से) शिकम पर हाथ रखने के वक़्त आवाज़ क़राक़र होना ॥

अस्बाब-सक़ील(देर में हज़म होने वाली) ग़िज़ा अमरूद, मसूर, वग़ैरह खाना ज़ौफ़ मेदा होना, फ़िसाद ख़िल्त, बाज़ औक़ात मेदे में कीड़ों का आरिज़ (पैदा) हो जाना ॥

इलाज ‡ (१) पोस्त बेख़ अन्मोल बूटी, मिर्च स्याह, ज़ीरा स्याह, बाब

‡ यह दोनों नुस्ख़े गिरानी शिकम बहज़्मतुआम के लिये भी अजब मुफ़ीद हैं ॥

रंग, पोस्त हलेला ज़र्द, सोंठ बड़ी, पीपल, जवाखार, नमक लाहौरी, मुसावीउलवज़न सफूफ [चूर्ण] करके पाँच माशे खाएं ॥

(२) ज़ीरा गुल अन्मोल बूटी, सौंठ, अजवायन हर एक एक तोला और बड़ी पीपल वरेबन्द चीनी हर एक छः माशे कैरी आम दो तोले नमक लाहौरी नमक स्याह नमक सांभर हर एक चार माशे पीस कर और अर्क़ लीमूं क़ाग़ज़ी में आमेज़ करके (मिला के) बेर की बराबर गोलियां बना रक्खें और बाद तुआम एक गोली खाऐं ॥

परहेज–सक़ील व बासी व रोग़नी ग़िज़ा भंग व मिठाई वग़ैरा ॥

कूलंज(दर्दसूल व बावगोला)

अलामात–यह मर्ज़ ब सबब पड़ जाने सुद्दे के अमआ (आंत) कू हों में आरिज़ होता है और ब नौबत औद करता है इस में रीह और पाख़ाने का ख़ुरूज ब दुश्वारी और दर्द के साथ होता है कभी शिद्दत दर्द से सर्द पसीना आता है इसी की एक हालत का नाम ईलाउस है जिस में कै के साथ पाख़ाना निकलता है और जिस्म से बदबू आती है बाव गोला भी इसी की एक क़िस्म है ॥

अस्बाब–यह मर्ज़ ग़ैरहज़्म ग़िज़ा जमा हो जाने, तेज़ जुल्लाब लेने, क़ब्ज़ बहुत दिनों तक रहने, कसरत जमाअ, कसरत बेदारी, सर्द पानी पीने बहुत ख़ुश्क चीज़ों के खाने, ग़िज़ा पर ग़िज़ा खाने भीगा हुआ अनाज जिस में अंकूरे फूट आये हों खाने बहुत ज़्यादह हंसने हाजत पेशाब व पाख़ाना रोकने मूली दही एक वक्त में खाने शिद्दत प्यास में खाना खाने वग़ैरह से पैदा हो जाता है ॥

इलाज-(१) अन्मोल बूटी की जड़ की छाळ पानी में पीसकर नीम गर्म शिकम पर ज़माद करें ॥

(२) अन्मोल बूटी की जड़ खरळ करके मिक़अद (मुक़ाम पाखाना) में रक्खें और पानी में पीस कर नीम गर्म पेट पर भी लेप करें ॥

(३) नुसख़ेजात बदहज़मी सब इस के लिये मुफ़ीद हैं (देखो सुफ़ा २५ व २६)

नोट– इस मर्ज़ के लिये चिलम में बजाय तम्बाकू के नीम रख कर पिलाना भी अजबुल असर है॥

परहेज-सर्द पानी, सक़ील ग़िज़ा

८- जहीर (पेचिश)

अलामात व शनाख्त-

मरोड़े के साथ थोड़ी थोड़ी देर में

दस्त की हाजत होना, हर बार दस्त का बहुत कम२ मरोड़े के साथ निकलना, दस्तके साथ आँव ख़ून या कच्ची ग़िज़ा का निकलना, पेशाब बंद या कम उतरना, भूक कम, बेचैनी, सुस्ती वग़ैरह ॥

अस्बाब. ज़्यादह रोग़नी व सर्द ग़िज़ा को खाकर फ़ौरन सो जाना मिर्च सुर्ख़ वग़ैरह ज़्यादह गर्म व सक़ील व बादी व तुर्श व ख़ारी व तीखी चीज़ों का ज़्यादह खाना, खाने पीने में ज़्यादह बदपरहेज़ी करना, कसरत जमाअ कसरत इस्तेमाल मेवेजात ख़ाम, असहाल में बदपरहेज़ी ॥

इलाज. अन्मोल बूटी की जड़ ख़ुश्क या तर चार माशे को बारीक पीसकर अफ़यून ४ मा० और गुड़ या राब४ मा०मिलाकर १६ गोलियां बना लें, और जवान आदमी को चार २ घंटे के वक़्फ़े से एक एक गोली दिन भर में तीन या चार खिलाएं दो तीन रोज़ में बिलकुल सेहत होगी अगर पेचिश पुरानी हो तो इलावा गोलियाँ मज़कूर खाने के डेढ़ तोले बेलगिरी को पीस कर ३ तोले गुड़ या शकर के साथ पाव सेर पानी में आध घंटे जोश देकर और छान कर ठंडा करके निस्फ़ २ छटांक करके दिन भर में चार पांच बार नोश करें ॥

परहेज. नहाना, सर्दी खाना, सर्द पानी ज़्यादह पीना, ज़्यादह चावल खाना, मिहनत जमाअ, नया ग़ल्ला रोग़नी ग़िज़ा ॥

७. अमराज आजाय जेर नाफ (नाभि से नीचे के रोग)

१. वजअ कुलया (दर्द गुर्दा)

अलामात गुर्दे पर कमरगाह के गिर्दा गिर्द सख़्त दर्द होता है ॥

अस्बाब. बइफ़रात रियाज़त करना, कसरत जमाअ रियाह ग़लीज़ का गुर्दे के गिर्द मुजतमा (इकट्ठा) होजाना बबाइस ज़्यादा प्यादा या चलने या अक्सर घोड़े पर चढ़ कर ज़्यादह दौड़ाने या ज़्यादह बैठे या खड़े रहने वग़ैरह से ज़ोफ़ गुर्दा हो जाना गुर्दे में क़ुरहा या ‡ पथरी पड़ जाना ॥

इलाज. पोस्त बेख़ अन्मोल बूटी (आक की जड़ का बक्कल) पोस्त

‡ अंगुश्तरी आहनी हाथ में पहनना और अंग्रेज़ी बूट जिस में आहनी कीलें जड़ी हुई हों पांव में पहनना संग गुर्दे के तोड़ने के लिये अज़बस (निहायत) मुफ़ीद है ॥

बसेंदू हरएक दो तोले, पानी बमिक़दार मुनासिबमें पीसकर नीम गर्म करके मुक़ाम दर्दपर क़द्रे घी चुपड़ कर गाढ़ा लेप करें और उपले की आग से सेकें, फ़ौरन सेहत हो ॥

(२) आतशक

अलामात-अव्वल क़ज़ीब (मूत्र अंग) पर फुंसियाँ निकलना, जिल्द (खाल) फटना, दर्द व जलन होना पीप निकलना वग़ैरह, दर्जा दोम में चहरे पर ज़र्दी, सर दर्द, हथेली और सीने पर और नीज़ पांवके तलुवों में और बाज़ औक़ात (कभी २) दीगर (दूसरे) आज़ाय जिस्म (शरीर के अंगों) पर तांबे के रंग के से दाग़ नमूदार होना, जोड़ों में दर्द, सर पर फुंसियाँ,बाल झड़ना वग़ैरह और दर्जे सोम में तमाम जिस्म में ज़ख़्म, सिल, फ़ालिज, इस्तिसक़ा हो जाना, तिहाल व गुर्दा व जिगर पर भी असर पहुंचना, नाक या तालू फूट जाना वग़ैरह अतिब्बाय अंग्रेज़ी इसकी दो क़िस्म बयान करते हैं, एक मुक़ामी जो सिर्फ़ अज़्व तनासुल परहोतीहै, दूसरी जिस्मानी जो बदन के दीगर आज़ा (दूसरे अंगों) पर भी नमूदार होती है

अस्बाब-ज़ने ग़ैर (दूसरेकी स्त्री) या फ़ाहिशा (व्यभचारिणी) या हायज़ा (पुष्पवती) या मरीज़ा (रोगी) से जमाअ (सहवास)करना कसरत जमाअ, क़ज़ीब (लिंग) पर ज़रब (चोट) पहुंचना, खारी या गरम पानी से क़ज़ीब को अक्सर धोना, आतशक के मरीज़ ने जहां पेशाब किया हो वहां पेशाब करना, ऐसे मरीज़ के साथ सोना या खाना पीना, मौरूसी होना वग़ैरह ॥

इलाज- (१) बाद मुसहिल लेनेके अन्मोल बूटीकी जड़ दो हिस्से फिर्च स्याह एक हिस्सा, कूट छान कर और हमवज़न गुड़में मिलाकर ज्वार की बराबर गोलियां बना रक्खें, एक गोली सुबह व एक शाम रोज़ाना खाऐं, ग़िज़ा मूंग की मुलायम खिचड़ी या दाल मूंग, चन्द रोज़ में सेहत होगी ॥

नोट- अगर कभी मुंह आजाय तो कचनाल की छाल पानीमें जोश देकर कुल्ली करें ॥

(२) अन्मोल बूटी की लकड़ी को जलाकर कोयले को बारीक पीसें और हम वज़न शकर सफ़ैद और रोग़न गाय मिलाकर छः माशे रोज़ खाऐं, हफ़्ते अशरे (आठ दस दिन) में सेहत होगी ॥

(३) अन्मोल बूटी की छाल दस माशे, अजवायन खुरासानी ढाई माशे शिंगरफ़ ५ माशे, तूतिया दो रत्ती, अक़रक़रहा ५ माशे, सब को कूट छान कर बेर की लकड़ी की आग पर डाल कर उसका धुआँ ले और नुस्ख़े वाला (उपरोक्त) नं० १यार

भी काम में लायें तो बिहतर है ॥

(४) शिंगरफ़ सात रत्ती, तूतिया सब्ज़ ७ रत्ती, बाबरंग ५ माशे, अन्मोल बूटीकी जड़की छाल १० माशे, और अगर मिज़ाज मुक़व्वी (बलिष्ट) हो बीस माशे, सबको कूट पीसकर छः कुर्स (टिकयें) बनायें और बाद मुसहिल के बग़ैर पानी के हुक़्क़े में या सिर्फ़ चिलम में बेर की लकड़ी की आग से मिस्ल तम्बाकू के पियें, और उसका धुआँ ज़ख़्म पर लें, और उसका गुल कि मिस्ल राख के हो जाय लुआब दहन (मुंह का थूक) में मिला कर तीन चार योम (दिन) तक सुबहको तमाम ज़ख़्मों पर मलें, ग़िज़ा रोटी घी शकर के साथ खायें ॥

मरहम (५) अन्मोल बूटी के पत्ते २१ अदद लेकर और दो छटांक सर्सों के तेल को खूब गर्म करके सात २ पत्ते तीन बार इस तेल में जला कर राख करलें, बादहू मोम दो तोले मिला कर मरहम बनालें और ज़ख़्मों पर लगायें ॥

(६) अन्मोल बूटी की जड़ की राख, बंसलोचन, दाना इलायची सफ़ेद, कत्था गुलाबी, ज़ंगार, हर यक एक २ तोला को अर्क़ गुलाब में नीम के डंडे से तीन रोज़ खरल करके चने की बराबर गोलियां बना लें और एक सुबह व एक शाम हमराह आब (पानी के साथ) खायें, चन्द रोज़ में फ़ायदा होगा ॥

(७) पोस्त बेख़ अन्मोल बूटी साये में सुखा कर अर्क़ चूका में तर करके फिर खुश्क करें और मिर्च स्याह हमवज़न मुसल्लम (बे टूटी) लेकर दोनों को ज़र्फ़ गिली (मिट्टी के बासन) में ‡ गिले हिकमत करके दस सेर जंगली कंडों की आग में जलावें सर्द होने पर निकाल कर बारीक पीसलें और एक माशे से दो माशे तक पान बा-मसालह में सुबह व शाम दोनों वक्त खाते रहें ३ या ७ योम (दिन) में सेहत होगी ॥

परहेज-खटाई, मिर्च सुर्ख़, नमक, ग़िज़ाय ग़लीज़ व बादी, गोश्त, ब्रहनगी (नंगापन) शब बेदारी (रात का जागना) अशयाय क़ाबिज़, अशयाय ज़्यादा गर्म या ज़्यादह सर्द, जमाअ, दूध, दही, व अचार व बेंगन व तेल, ॥

३-औराम मग़ाबिन(बद)

अलामात-यह एक फोड़ा है कि

---

‡ गिले हिकमत किसी दवा पर मिट्टी लगा कर कपड़ा ऊपर से मंढना या कई तह मिट्टी या मुलतानी मिट्टी की चढ़ा देना या किसी गिली बरतन में रख कर और उसका मुंह ढक कर मिट्टी लपेट देना कि आग की तपिश से ज़रर (नुक़सान) न पहुंचे ॥

पेड़ू और रान के दरम्यान में ठीक जोड़ पर बीच में निकलता है, पहिले एक गुठली सी होती है, बाद में ज़्यादा ज़ुहूर पकड़ कर (व्यक्त हो कर) बड़ी तकलीफ़ देती है ॥

अस्बाब- माद्दे सूज़ाक या आतशक ॥

इलाज- (१) अन्मोल बूटी के दूध का फाया लगायें ॥

(२) अन्मोल बूटी के पत्ते पर रेंडी का तेल लगा कर गर्म करके बांधें ॥

‡ ज़ौफ़ बाह (नामर्दी) व खमीदगी आलाए तनासुल (लिंग का खम)

अलामात- आब मनी का कम होना, बाद जमाअ के तकान ज़्यादह होना, लागरी व कमज़ोरी, ज़ौफ़ दमाग़, जल्द अनज़ाल (वीर्य स्खलित) होना क़ज़ीबका बवक्त ज़रूरत इस्तादा न होना, क़ज़ीब का ख़मीदा होना वग़ैरह अलामात (चिन्ह) ज़ौफ़ बाह की हैं ॥

अस्बाब- कसरत जमाअ, अशयाय गर्म का ज़्यादा इस्तैमाल, फ़िक्र व रंज व ख़ौफ़ की ज़्यादती, इश्क़िया क़िस्से कहानी पढ़ना, ख़यालात व तरफ़ ज़नान (स्त्रियां) सोहबत माहरूयां, इग़लाम (गुदा भंजन) जलक़, (हथलस) कमसिनी में मुबाशरत (स्त्री प्रसंग) कसरत अहतलाम, जिरयान व बाइस बदहज़मी या क़ब्ज़ दायमी या व अस्बाब मज़कूरा, मर्द औरत का रोज़ाना यकजा सोना, ज़्यादा पान खाना वग़ैरह ॥

इलाज- (१) अन्मोल बूटी के दो तोले फूलों में धतूरे के फूल व मूसली स्याह व इसबद, हर एक दो तोले पीस कर और घी में चरब करके ६ तोले शकर सफ़ेद में क़िवाम करलें और चार माशे रोज़ खा कर ऊपर से दूध पी लिया करें कुव्वत बाह के लिये बे नज़ीर है ॥

(२) [illegible] के दूध को [illegible] में शामिल बारह [illegible] करके [illegible] ज़ीब पर (सर क़ज़ीब छोड़ कर) एक एक रत्ती तिला करें, अगर इत्तफ़ाक़न [illegible] नमूदार हों जैसा कि बाज़ औक़ात (कभी २) हो जाता है

‡ तक़वियत बाह व दफ़ै मरज़ जिरयान के लिये दीगर निहायत मुफ़ीद व मजर्रब नुसख़ेजात मय अक़साम व शनाख़्त व परहेज़ वग़ैरह रिसाला जिरयान मुसन्निफ़े मुसन्निफ़ किताब हाज़ा में मुलाहज़ा हों ॥

तो मक्खन ताज़ा लगायें, दफ़ै नुक़सान जलक़ जदगी व तक़वियत बाह को अजीबुल असर है ॥

(३) एक पारचे को अन्मोल बूटी के दूध में एक दिन तर रख कर साये में खुश्क करलें फिर उस में घी लगा कर दो बत्तियां बना कर घी में जलायें और उसके नीचे एक कांसे की थाली रक्खें, जो रोग़न फ़तीले से थाली में टपके ज़कर पर उसका सर छोड़ कर तिला करें और ऊपर से पान बंगला या अरंड के पत्ते बाँधें और बाद एक पहर के खोल डालें, अगर आबला पड़ जाय तो रोग़न गाव इक्कीस बार के धुले हुये को लगायें, और तीन रोज़ तक इसी तरह अमल करें जलक़ जदगी के ज़ोफ़ बाह को बहुत मुफ़ीद है ॥

(४) ज़ीकुल नफ़्स के नुस्खे नं० १६ को इस्तैमाल करें ॥

(५) बेख़ अन्मोल बूटी, बेख़ कनेर, बेख़ धतूरा, पोस्त बेख़ बंग हमवज़न साये में खुश्क करके कूट कर बर्ग धतूरे के अर्क़ में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनायें, जमाअ से क़ब्ल एक गोली अपने पेशाब में पीस कर क़ज़ीब पर (सर क़ज़ीब छोड़ कर) लगायें और बाद खुश्क होने के जमाअ करें ॥

(६) अन्मोल बूटी (आक) का दूध चार तोले, मसका गाव १० तो० बछनाग स्याह व अक़रक़रहा गुजराती व सींदूर हरएक एक तोला लेकर सोम (तीसरे) व चहारुम को बारीक कूट छानकर और सींदूर मिलाकर कड़ाही में करें और दूध मज़कूर व मसका डाल कर क़लम के दस्ते से कि फ़लूस (पैसा) उस में नसब[जड़ा]हो ४ योम हल करें फिर यक माशे क़ज़ीब (लिंग) पर मल कर पान बांधें, सुबह को पानी से धोवें ॥

(७) शीर अन्मोल बूटी व थूहड़ व तिधारा व बड़, हरएक तीन माशे तुख़्म धतूरा बारीक क़ोफ़ता (कुटा हुआ)बेख़्ता(छाना हुआ)६मा० रोग़न गाव यक तोला, अव्वल रोग़न को पिघलायें, जब जोश आ जावे चारों दूध डालें और हल करें और फ़ौरन नीचे उतार कर तुख़्म धतूरा दाख़िल करें और खूब हल करें और ज़र्फ़ में रक्खें, ब वक्त शब (रात) बक़दर नख़ूद (चनेकी बराबर) पान पर मल कर बांधें, सुबह को खोलें ॥

(८) अन्मोल बूटी (आक) का दूध व शहद ख़ालिस हर यक दो छटांक कढ़ाई आहनी (लोहे की) में डाल कर आहनी दस्तेसे इसक़दर हल करें कि उसकी लुज़ूजत (चिपकाव) से कढ़ाई दस्ते के साथ ज़मीन से उठ आवे; बादहू अफ़यून ख़ालिस चार माशे बख़ूबी मिलायें और चीनी के बरतन में रख छोड़ें ब वक्त ज़रूरत क़ज़ीब को रोग़न गाव से चरब करके और दवा मज़कूर (उपरोक्त) को पट्टी पर लेप

करके बांधें, बाद एक पहर दूर कर के रोग़न गाव मेश (भैंसका घी) इक्कीस बार का धुला हुआ मलें यही अमल तीन योम करें ज़ख़्मकी जड़से पानी जाकर सेहत हो जायगी

(९) पारचा अम्बा हल्दीमें मुकर्रर तरब रके सायेमें सुखायें, फिर आबबर्ग धतूरेमें तीन बार, फिर शीर अन्मोल बूटी (आक) में तीन बार तर करके हर बार सायेमें सुखायें, बाद्-हू रोग़न शीर मेशमें आतिश (आग) नर्म पर बिरयां करें, बवक्त ज़रूरत इस पट्टी पर शहद मल कर हीरा हींग एक रत्ती बारीक कर के छि-ड़कें और तीन योम बांधें ॥

(१०) शीर अन्मोल बूटी (आक) दस माशे रोग़न गाव छः तोले, शहद ख़ालिस सात माशे, जंगली कबूतर की बीट व ख़ानगी कबूतर की बीट व पारा व अक़रक़रहा हर एक साढ़े तीन माशे, सबको क ई आहनी में बारह पहर खरल करें, बवक्त शब क़दरे मल कर पान बांधें सात योम तक अमल में लायें ॥

(११) लौंग, पोस्त बेख़ कनेर सफ़ेद जंगली, मग़ घूंघची सफ़ेद, कुचला, ज़हर मीठा तेलिया, जायफल, दारचीनी, अफ़यून ख़ालिस हर एक छः माशे शीर अन्मोळ बूटी तीन तोले, रोग़न गाव एक तोले खरल आठ पहर करें बवक्त हाजत कपड़े पर लगा कर हश्फ़े (लिंग का सिर) को छोड़ कर क़ज़ीब (लिंग) पर बांधें सुबह को खोलें एक हफ़्ते तक अमलमें लायें अगर फुंसियां पैदा हों तो मरहम ज़ैल (नीचे लिखा) इस्तैमाल करें, यह नुस्ख़ा मजलूक़ [हथलस का रोगी] मायूसुल इलाज [निरास] के लिये भी अकसीर का हुक्म रखता है ॥

मरहम-यक तोला रोग़न गाव, एक सौ एक बार धोकर कत्था सफ़ेद व सफ़ैदा काशग़री, व शंजरफ़ रूमी, हर एक एक माशे, सुपारी सोख़ता १ अदद, बारीक पीस कर मिलायें ॥

(१२) मुमस्सिक-गुल अन्मोल बूटी, गुल धतूरा, मूसली स्याह, इस्बदं, हर एक बीस माशे पीस कर रोग़न ज़र्द ५ तोले में चरब करके बक़दर ४ माशे क़ब्ल जमाअ [स्त्री प्रसंग से पहिले] खाकर दूध पियें ॥

परहेज.खटाई, मिर्च सुर्ख़ वग़ैरह अशयाय [चीज़ें] गर्म खाना, जमाअ करना व दीगर अस्बाब मरज़ [रोग के दूसरे कारण] वग़ैरह ॥

मुज़िरात बाह-राम तुलसी, कासनी, काहू, धनिया, लहसन ख़ाम, चौलाईका साग, चूका, काफ़ूर, इमली, आलूबुख़ारा, लीमूं, नमक, ठंडा पानी ॥

५. बवासीर

अलामात. मिक़अद [गुदा] पर मस्से, पायख़ाने के वक्त सोज़िश

[जलन] आंव निकलना, चहरा फीका ज़र्द हो जाना, कमज़ोरी, क़ब्ज़, बवासीर खूनी में मस्सों से खून निकलता है और बादी या रीही में पेट में क़राक़र, क़ब्ज़ दर्दसर ज़ौफ़ बदन, पेचिश, और कभी इस हाल [दस्त] खूनी हो जाते हैं। जो बवासीर कि तवल्लुद [पैदायश] के वक्त से ही हो या मिक़अद [गुदा] के अन्दर तीसरे बन्द में हो या सौदा व सफ़रा व बलग़म [वात पित्त, कफ़] तीनों अख़्लात के फ़िसाद [त्रिदोश] से हो या मरीज़ के दस्तोपा [हाथ व पांव], मिक़अद, नाफ़ [नाभि] चेहरा वग़ैरह पर वरम आ गया हो या क़ै, आज़ा शिकनी [अंगफूटन], बुख़ार, प्यास मिक़अद का पकना, दर्द की शिद्दत, दस्त, इख़राज खून [रुधिर निकलना] की बहुत कसरत [अधिकता] हो तो इन सूरतों में मरज़ क़रीबन ला इलाज [असाध्य] है ॥

अस्बाब-तुर्श, कसीली, तल्ख़, खुश्क, ठंडी, चर्परी ग़िज़ा ज़्यादा खाना, बे वक़्त खाना, दिन में सोना मै नोशी की कसरत [मद्यपान की अधिकता], कसरत जमाअ (स्त्री प्रसंग की अधिकता], सर्द हवा या धूपमें घूमना, क़ब्ज़ दायमी, ज़्यादा लिखना पढ़ना, या बहुत पड़ा रहना, इग़लाम [गुदा भंजन] कराना वग़ैरह इसके अस्बाब [कारण] हैं

इलाज.[१] अन्मोल बूटी के ताज़ा पत्ते से बजाय कुलूख़ [मिट्टी का डेला] के मिक़अद साफ़ किया करें और सांप की केंचली आग पर रख कर मिक़अद को चन्द रोज़ धुआं दें, दोनों क़िस्म की बवासीर को मुफ़ीद है ॥

(२) अन्मोल बूटी का दूध मस्से पर लगाऐं, इससे तकलीफ़ शदीद (अधिक) तो होगी मगर मस्सेको जिस पर लगाया जायगा काट कर दफ़े (दूर) और खुश्क कर देगा ॥

(३) रसौत आध पाव, बर्ग नीब (नीम के पत्ते) आध सेर, इन दोनोंको अलहदा अलहदा (अलग२) किसी बर्तन में बवक्त शब (रात के समय) भिगो रक्खें, बवक्त सुबह हर दो अश्याय (चीज़ें) मिलाकर अलग २ छानें, बादहू दोनों को मिला कर अन्मोल बूटी की लकड़ी की आग जला कर उस पर पकायें, जब क़िवाम गोली बंधने क़ाबिल हो जाय तो उसमें इलायची खुर्द (छोटी) ६माशे कोफ़्ता करके (कूट कर) मिलाऐं और बक़द्र कनार दश्ती (जंगली बेर के बराबर) गोलियां बनालें, सुबह व शाम हर दो वक्त एक एक गोली हमराह मक्खन ताज़ा खाऐं, परहेज़ अश्याय तुर्श व गर्म से रक्खें ॥

नोट- चूतड़ की हड्डी पर सींगी लगवाना बिहतरीं (सबसे अच्छा) इलाज है ॥

परहेज. गोश्त, दूध, दही, गर्म मसालह, खटाई; मिर्च सुर्ख, तेल, गुड़, बाजरा, बैंगन, अचार, राई, लहसन, शराब, शीरीनी, घोड़े की सवारी, बवासीर का खून, खुसूसन (मुख्यतया) अगर स्याह रंग का हो इक दम बन्द करना (अगर ऐसा किया जायगा तो अमराज़ (रोग) मिर्गी, सिल, जुज़ाम (कोढ़) ख़फ़क़ान, सुदाअ (दर्द सर) दर्द गुर्दा व पसली वग़ैरह हो जाने का बड़ा अन्देशा है) ज़्यादा पानी पीना ॥

६- इर्क मुर्दनी (नहरवा या नारू)

अलामात- यह एक क़िस्म का दाना होता है कि अक्सर टांग की पिंडली में निकलता है, बादअज़ां और फूल कर बशक्ल आबला हो जाता है जिसमें सूराख होकर एक बारीक रग बशक्ल धागे के सुर्ख मायल बस्याही बाहरको निकलती है जिसके टूट जाने से ख़ौफ हलाकत (मौत का डर) है ॥

अस्बाब. तालाब वग़ैरा का पानी पीना जहां बारिश का पानी मुख़्तलिफ़ मुक़ामात से बहकर जमा होजाता है

नोट—बाज़ की राय में नारवा एक क़िस्म का कीड़ा होता है कि तालाबों या नालियों में पाया जाता है, जब उनके पानी में हाथ पांव धोए जाते हैं तो यह कीड़ा मुसामों की राह से जिल्द (खाल) में पेवस्त हो जाता है (समा जाता है) जिस से एक दुम्मल नुमायाँ होता है यह कीड़ा तूल (लम्बाई) में निस्फ़ (आधा) फुट से बीस फ़ीट तक होता है ॥ और अगर इस कीड़े को पानी में पी जावें तो इस से यह मरज़ नहीं होता क्योंकि कीड़ा मेदे में पहुंच कर मर जाता है ॥

इलाज. (१) नारवा और उसके आस पासके वरम को सर्सोंके तेलसे चरब करके अन्मोल बूटी के पत्ते से सेंक करें फिर उन्हीं नीम गर्म पत्तों को वरम पर बांधें ॥

(२) अन्मोल बूटी के एक सब्ज़ पत्ते पर सर्सों का तेल चुपड़ कर और आग पर सेंक कर नीम गर्म बांधें ॥

परहेज. तालाब वग़ैरा का पानी पीना और उन में हाथ मुंह धोना या न्हाना या खुश्क ग़िज़ा खाना ॥

८- अमराज जिल्दया
(त्वचा रोग)

१- जुज़ाम (कोढ़)

अलामात. अव्वल अव्वल किसी किसी मुक़ामपर जिल्द(त्वचा,खाल) की रंगत बदल कर गाढ़ी सुर्ख़ या ऊदी हो जाना, उन मुक़ामात पर चिकनापन चमकना और उनका बेहिस(सुन्न)होजाना,दर्द होना बादहू (पश्चात) ऊदी रंगत सुर्ख़ी कर जिल्द का रंग भूरा पड़ जाना, चमड़ा नर्म या दबीज़ होजाना, ज़रा सी रगड़ से खालमें ज़ख़्म पड़ जाना चहरे पर उभार, ख़ास कर नाक व कान पर और टांगों पर भी उभार बादहू उभारोंमें भी सोज़िश (जलन) ख़ारिश,ज़ख़्म, बदबूदार पीप निकलना, हाथ पांव की उंगलियों का गल गल कर गिरना और फिर आज़ाय अंदरूनी (अंग भीतरी) शुश (फेफड़ा) वग़ैरह में सरायत कर जाना वग़ैरह, और एक सूरत यहभी है कि मुक़ाम मरज़ पर छाले पैदा होजाते हैंछाले सुर्ख़ीकर उसजगह पर हलके रंगके दाग़ रह जाते हैं,यह छाले अक्सर (बहुधा)अव्वल अव्वल पांव, हाथ, टांग और बाज़ुओं पर पैदा होते हैं और मरज़ की ज़्यादती (अधिकता) पर चहरे और सीने पर ख़फ़ीफ़ (हलके २) नमूदार होते हैं । यह सब मुक़ामात [स्थान] बे हिस [सुन्न] और बाज़ दफ़अ किसी क़दर ऊंचे हो जाते हैं, वग़ैरा ॥

अस्बाब. जुज़ामी [कोढ़ी] के पास रहना,आतिशक होना कसरत जमाअ [अधिक स्त्री प्रसंग], पानी में ज़्यादह रहना, गर्मी में ज़्यादा रहना, दिन में बहुत सोना, कसरत गुस्सा व रंज व फ़िक्र, हाजत बोल, बिराज़ [मूत्र, मल] को अकसर रोकना, खटाई मिर्च सुर्ख़ ज़्यादा खाना, गर्म गर्म दूध बकसरत पीना, मौरूसी (माता पिता या दादा आदि से प्राप्त] होना वग़ैरा

इलाज. सफ़ूफ़ पोस्त बेख़ अन्मोल बूटी [आक की जड़ के बक्कलका चूर्ण], सफ़ूफ़ मिर्च स्याह, रुब्ब चिरायता १२ ग्रेन [1/… मा०-६। रत्ती] और सैनिक [संखिया सफ़ेद] एक ग्रेन [1/15 माशे यानी क़रीबन निस्फ़ रत्ती, अर्द्ध रत्ती] सब को आमेज़ करके बारह गोलियां बनाऐं और एक गोली सुबह और एक शाम बाद खाना खाने के खिलाऐं ग़िज़ा मुक़व्वी [बल कारक] और घी ज़्यादा खिलाऐं । जिस्म [शरीर] पाक [पवित्र] रक्खें । और मरहम ज़ैल [निम्न] लगाते रहें । जल्द सेहत कुल्ली होगी ॥

नुस्ख़ा मरहम—तूतियासुफ़ेद मुर्दारसंग ज़र्द, हर एक दो माशे, इनको बारीक पीस कर मक्खन गाव एक छटांक में मिलाकर रख छोड़ें ॥

नोट— यह मरहम बिसहरी और आतिशक के लिये भी मुफ़ीद है॥

परहेज-खटाई, नमक, दूध, दही, गुड़, तिल, उड़द, गोश्त, चरपरी व तेज़ चीज़ें खाना, दिन में सोना, जमाअ (स्त्री प्रसंग) करना, ज़्यादा चलना फिरना वग़ैरा।

२-बरस व बहक अब्यज
(सुफ़ेद दाग़ व छीप)

अलामात- जो सुफ़ेद २ दाग़ जिल्द्में ज़ाहिर होते हैं और गोश्त व जिल्द के अन्दर भी घुसे होते हैं उन्हें " बरस " और जो रक़ीक़ मुदव्वर (पतले, गोल) हैं उन्हें " बहक़ अब्यज़ " कहते हैं, मगर 'बहक़' का अगर जल्द इलाज किया जाय तो ब-आसानी जल्द सिहत हो जाती है, मगर 'बरस' से सिहत पाना किसी क़दर मुश्किल है

अस्बाब-फ़िसाद माद्दए बलग़मी (कफ़ दोष)।

इलाज- (१) अनमोल बूटी के आठ पत्ते सब्ज़, कलोंजी सवा दो तोले, बावची नौ माशे, तुख़्म धतूरा ४॥ माशे, सबको पीसकर तिला करें।

(२) फ़ालिज व लक़वे के नुस्खे नं० १ की गोलियाँ में से एक गोली सुबह व एक शाम, रोज़ाना खाऐं।

(३) बेख़ अनमोल बूटी चार रत्ती संखिया सुफ़ेद चौथाई रत्ती, बाहम पीस कर चार ख़ूराक करें और सुबह व शाम तीन माह तक खाऐं और सिर्के में मिलाकर लगाया करें ग़िज़ा मुक़व्वी व घी ज़्यादह खाऐं

परहेज. अशयाय सर्द व तुर्श व बादी व नमक वग़ैरा।

३- जरब व हिक्का
(ख़ारिश तर व ख़ुश्क)

अलामात- यह एक क़िस्म की छूतदार बीमारी है जिस में जिस्म के अन्दर एक क़िस्मका कीड़ा होता है जो जिल्द के अन्दर पहुंच कर ख़ारिश पैदा करता है हाथों की उंगलियों की घाई में व बदन के हसस-ज़ेरीं (शरीर के अधोअंग) में और बाज़औक़ात बाळाई हिस्सों में छोटी २ फुंसियां पास २ निकल आने को ख़ारिश तर या " जरब " कहते हैं। इन बुसूरमें ख़ारिश शदीद होती और पीब निकलती है बाज़ औक़ात पीब नहीं भी निकलती। अगर बिला बुसूर (फुंसियाँ) के सिर्फ़ ख़ारिश ही ख़ारिश होती है तो इसे ख़ारिश ख़ुश्क या "हिक्का" कहते हैं।

अस्बाब-अशयाय गर्म व खारी व ज़्यादा शीरीं खाना, साम्हर नमक का ज़्यादा खाना, फ़िसाद या ज़्यादती बलग़म शोर व सौदा सोख़्ता, जिस्म को मैला रखना।

इलाज- (१) अनमोल बूटी के हरे पत्ते इक्कीस अदद लेकर और सर्सों के तेल पाव सेर को ख़ूब जोश देकर एक २ पत्ता उसमें डालें जब सब जलकर राख हो जायँ आग से उतार कर क़दरे (अनुमान ३ माशे) नील पीस कर मिलायें और शीशी में भर रक्खें बवक्त ज़रूरत (आ-वश्यकता के समय) मुक़ामात ख़ा-रिश पर मलें। दो तीन योम(दिन) में सिहत होगी।

(२) अनमोल बूटी के दूध में गन्धक दो योम खरल करके कुर्स बनाकर साये में सुखालें फिर एक बर्तन में डालकर पानी भर कर चार पहर नर्म आग पर जोश दें जिस क़द्र तेल पानी पर आये उसको ब-अहतयात (सावधानी से) उतार लें और लगायें।

(३) ज़र्द रंगकी अनमोल बूटी के दूध में गन्धक को पका कर दो दिन तक खरल करें फिर कुर्स (टि-कियां) बनाकर ब तर्कीब बाला (उपरोक्त विधि से) तेल लें और इस्तेमाल करें।

(४) बर्ग अनमोल बूटी ज़र्द छः अदद हरताल तबक़ी व मनसल नौ२ माशे, दोनों को बारीक करके और हर बर्ग मज़कूर (उपरोक्त) पर सर्सों का तेल चुपड़ कर उन पर सफ़ूफ़ मज़कूर छिड़कें और तह ब तह लगाकर दो छटाँक सर्सों के तेल में जलालें और सीमाब (पारा) यक तोले ख़ूब आमेज़ करके मुक़ामात ख़ारिश पर लगायें।

(५) अनमोल बूटीके पत्ते मय डण्ठलों के पानी में पीस कर हम वज़न आतिशबाज़ी की बारूद मिलायें और जाय (जगह)ख़ारिश पर लेप करदें और थोड़ी देर तक धूप में बैठें बाद तीन घंटे के नीम गर्म (आधा गर्म) पानीसे गुस्ल(स्नान) करें तीन चार योम में सिहत कुल्ली (पूरे तौर से) होगी।

(६) अनमोल बूटी की कोंपल पाव सेर, बावची पाव सेर, पारा एक तोला, अव्वल बावचीको ख़ूब कोफ़ता करके (कूट के) उसमें कोंपल मज़कूर डालें, जब कोफ़ता हो जांय तो पारे को दुहरे तीहरे पारचे में (कपड़े में) कई बार छानकर और मक्खन ताज़े को सौ बार पानीमें धोकर उसमें मिलायें तीन चार बार के मलने से यक़ीनन सिहत कुल्ली (पूरा आराम) होगी गुस्ल (स्नान)न करें।

(७) अनमोल बूटी के दूध को जमाकर सुखालें फिर जलाकर सर्सों का तेल मिला कर जिस्म पर मलें और चार पांच घड़ी बाद गुस्ल करें

(८) अव्वल अनमोल बूटीका दूध एक तोला लें और सर्सों का तेल एक छटांक को किसी आहनी ज़र्फ़ (लोहेका बर्तन) में आग पर ख़ूब गर्म करलें, फिर नीचे उतार कर आहिस्ता से दूध मज़कूर (उपरोक्त)

उसमें डालें, जब दूध भुन कर स्याह हो जाय उसे निकाल दें और रोग़न को शीशी में भर रक्खें, दिन में दो बार जिस्म पर मलें और बाद दो तीन घंटे के गुस्ल करलें, तीन रोज़में बिलकुल सिहत हो जायगी।

परहेज- जमाअ (स्त्री प्रसंग) अशयाय नमकीन, अशयाय गर्म, बेंगन, मिर्च सुर्ख़ व तेल वग़ैरा।

४.कूबा (दाद)

अलामात.यह मरज़ माद्दा सौदावी या फ़िसाद ख़ून से ज़ाहिर जिल्द पर अक्सर ज़ेर नाफ़ हस्स में (नाभिके नीचे के अंगों में) फैलता है, शदीद-उल-ख़ारिश है, जब तक गोश्त के अन्दर असर न करे इस का इलाज आसान है, बाद में बिला जोंक या पछनों के किसी क़दर दिक़्क़त से जाता है।

अस्बाब. माद्दा सौदावी या फ़िसाद ख़ून, नम धोती या दीगर पारचा पहनना आज़ाय जिस्म (शरीर के अंगोपांग) को साफ़ व सुथरा न रखना।

इलाज. (१) अनमोल बूटी के फूल और पंवार के बीज मुसावी कूट छान कर तुर्श दही मिळा कर मलें, जल्द सिहत कुल्ली होगी।

(२) ख़ारिश के नुस्खे नं० २ व ३ को इस्तेमाल करें।

परहेज.जिस्म को तर रखना, ज़्यादा गुस्ल करना, नम धोती बांधना।

५.सअफा (गंज)

अलामात-यह मरज़ अकसर सर व चहरेपर ज़ुहूर करता हैं और गोश्तके गिहरावमें नहीं पहुंचता, इस की फुंसियां खुश्क होकर सुर्ख़ी की तरफ़ मैलान रखती हैं अगर इन फुंसियों से ज़र्द ज़र्द पानी (पीब) ख़ारिज होतो उसे " साफ़ाय रत्ब" कहते हैं इसी का नाम " शेरीना" और "शेर पंजा" भी है अगर खुश्क हों जिस से खुश्क सफ़ेद छिल के जुदा होते हों तो उसे " सअफ़ा याबिस" बोलते हैं। " सअफ़ाय रत्ब " अकसर बच्चों के सिर में आरिज़ होता है।

अस्बाब.फुज़लात अफ्न (दुर्गन्धित) व रतूबात फ़ासिद व कसरत बुख़ारात दिमाग़ी,ज़ौफ़ आसाब (पट्ठे) और ख़िल्त सौदावी ग़ैर तबई।

इलाज. (१) अनमोल बूटी के

दूध को खुश्क करके जलालें और सर्सों का तेल मिला कर लगाऐं।

(२) ख़ारिश के नुस्ख़े नं० १ व ८ के रोग़न को लगाऐं।

(३) अनमोल बूटी के २ तोले दूध में एक छटांक रोग़न सरशफ़ (सर्सों का तेल) मिलाकर औटाऐं जब दूध सब जल कर सिर्फ़ तेल रह जावे आगसे उतारकर ब-इहतियात रख छोड़ें और वक़्तन फ़वक़्तन (कभी कभी) लगाते रहें।

परहेज. जमाअ़ करना, नाख़ुन लगाना, अगर तिफ़्ल शीरख़्वार (दूध पीने वाला बच्चा) हो तो जिसका दूध पीता हो वह जमाअ़ से परहेज़ रक्खे।

६. 'दाय-उस-‡सालब' 'दाय-उल-हय्या'

(बाल झड़ जाना)

अलामात- सर और रीश (डाढ़ी) के सिर्फ़ बाल गिर जानेको "दाय-उस-सालब" और बाल व पोस्त (खाल) दोनों के गिर जाने को "दाय-उल-हय्या" कहते हैं दाय-उल-हय्या का इलाज किसी क़दर दिक़्क़त तलब है इसमें पोस्त जिल्द मिस्ल पोस्तमार (सांपकी कैंचली) जुदा होता है।

अस्बाब. ख़िल्त रद्दी, फ़िसाद जिल्द।

इलाज. (१) अगर सर से बाल गिर गए हों तो शीर अनमोल बूटी क़द्रे लेकर मुक़ाम माऊफ़ (रोगी स्थान) पर उंगली से सुबह व शाम मले तीन या सात दिन में बाल निकल आऐंगे।

(२) गंज सर के नुस्ख़े इस्तेमाल करें।

७. दुम्मल व बुसूर व क़ुर्हा व नासूर वग़ैरा

अलामात. बड़े फोड़ेको "दुम्मल" छोटी फुंसियों को "बुसूर" जिस ज़ख़्म से पीब बहे उसे क़ुर्हा और जिस ज़ख़्म को चालीस रोज़ से ज़्यादा गुज़र जाऐं उसे नासूर कहते हैं। जो दुम्मल (फोड़ा) कि बग़ल में या कान के पीछे के मुक़ाम पर रान की जड़ में होते हैं उन्हें 'औराम मग़ाबिन' कहते हैं बग़ल के दुम्मलको उर्फ़ आम में "कखवारी" बोलते हैं।

‡ सालब यानी लोमड़ी को चूंकि यह मरज़ अक्सर होता है इस लिये इस नाम से मौसूम करते हैं

अस्बाब. ख़िल्त रद्दी ॥

इलाज. (१) अनमोल बूटी की कोंपल सोख़्ता (जली हुई) की-मुक़्ल सोख़्ता, सुपारी सोख़्ता, तुख़्म हलेला सोख़्ता, (हड़ का बीज जला हुआ) मुर्दार संग, कत्था, हर एक हमवज़न (बराबर) लेकर घी गरम करके इस में मिला कर मर्हम बनाएँ ॥ यह मर्हम हर क़िस्म के ज़ख़्मों को निहायत मुफ़ीद है

(२) अनमोल बूटी के दूध में रुई मुकर्रर (दो तीन बार) तर कर के साये में सुखाएँ ॥ फिर बत्ती बना कर सर्सों के तेलसे काजल पार कर नासूर पर लगाएँ ; दर्द नासूर दूर होगा ॥

(३) अनमोल बूटी के हरे पत्ते को पीस कर फोड़े या फुन्सी पर गाढ़ा लेप करें ; वरम को तहलील (घुलाकर पटका देना) करता और फोड़े को तोड़ता है ॥

पर्हेज़. दूध व दही , ज़्यादा पानी, मठा, ग़िज़ा क़ाबिज़ (गृष्ट भोजन) व ज़्यादा सर्द, नया ग़ल्ला तिल , आड़ू , नमक, तल्ख़ व तुर्श अश्या (कडुवे व खट्टे पदार्थ), सिर्का व शराब , प्याज़ , गोश्त (मांस) ॥

८ – अपरस नाख़ुन व छाजन ‡

(१) अनमोल बूटी के दूध को हम वज़न (बराबर तोल) मीठे तेल में मिला कर लगाएँ ॥

९ – नज़्फ़-उद्-दम

इख़राज ख़ून (रुधिर निकलना) कि किसी उज़्व (अंग) से ज़रब वग़ैरा (चोट आदि) लगने से बहे और बन्द न हो ॥

इलाज. (१) अनमोल बूटी के फलों से रुई * ताज़ा निकाल कर ज़ख़्म पर रक्खें ; ख़ून फ़ौरन बन्द होगा ॥

---

‡ जो ख़ुशूनत ख़ुश्की से हथेली में पैदा होती है उसे छाजन कहते हैं ॥

* अनमोल बूटी की रुई का तकिया बना कर सिरके नीचे या पेट के तले रखना जुमला अमराज़ बलग़मी व रीही उन आज़ा को नाफ़े हैं (उन अंगोंके सर्व कफ़ व बात अन्य रोगों को नफ़ा देता है ॥

(९) † अमराज़ गज़ीदि-नी (काटना) व नैशज-नी (डंक मारना) जान-वरान ज़हरदार व ज़हर खुर्दनी

१ — सांप

(१) अनमोल बूटी की जड़ को क़द्रे (थोड़े) पानी में घिस कर मार-गज़ीदा (सांप से काटा हु-आ) को पिलाएँ ॥

(२) ज़ख़्म मार गज़ीदा पर अ-नमोल बूटी का दूध टपकाएँ जब तक ज़ज़्ब होता रहे ॥

(३) अनमोल बूटी की छाल चार तोला, मिर्च स्याह दो माशा, आध सेर सर्द पानीमें घोट छान कर पिलाएँ ; क़ै और दस्त की राह सब ज़हर निकल जायगा ॥

[४] अनमोल बूटी के दूध में आरने उपले की राख तर कर के साए में खुश्क करलें ; यह राख यक माशा, नौसादर यक माशा, मिर्च स्याह तीन अदद, सब को बारीक पीस कर सुंघाएँ; मार-गज़ीदा फ़ौ-रन होश मे आए ॥

[५] अनमोल बूटी की तीन कों-पल गुड़ में मिला कर खिलाएँ और ऊपर से घी पिलावें ॥

[६] अनमोल बूटी की चार मुंह बन्द कली व सात मिर्च स्याह व फरफेंदुवा एक माशे बाहम पीस कर दें ॥

२ — बिच्छू

[१] अनमोल बूटी का दूध मु-क़ाम नैश [डंक] पर लगा कर उ-सी का पत्ता रख कर ख़ूब सेकें ॥

[२] अनमोल बूटी के दूध में तु-ख़्म ढाक पीस कर लगाएँ ॥

[३] अनमोल बूटी के पत्ते का अर्क़ दोनों नथनों में टपकाएँ ॥

[४] अनमोल बूटी की जड़ का अर्क़ मुक़ाम नैश पर लगाएँ ॥

---

† सांप, बिच्छू वग़ैरा ज़हरीले जानवरों, और संखिया वग़ैरा जमा-दात (धातु) के ज़हरों की शनाख़्त (पहिचान) व अलामात [चिन्ह] व दीगर [दूसरे] इलाज व परहेज़ वग़ैरा के लिये किताब फ़ादि ज़हर हिस्सा अव्वल व दोम मुसन्निफ़े मुसन्निफ़ किताब हाज़ा मुला-हिज़ा हो ॥

८— दीवाना कुत्ता*

(१) अनमोल बूटी का दूध और अमलतास पीस कर फ़ौरन लेप करें और दूध ज़ख़्म पर टपकायें अबतक अच्छा हो [सोखे]।

(२) अनमोल बूटी के दूध में गुड़ व तेल मिला कर लेप करें तीन कोंपल गुड़ में लपेट कर खिलाऐं व घी पिलाऐं।

(३) अनमोल बूटी का दूध दो तोला, धतूरे का अर्क़ [हरे पत्तों का रस] दो तोला, घी दो तोला को खरल करके लेप करें।

(४) दरख़्त अनमोल बूटी के नीचे की मिट्टीमें उसका दूध मिला कर गोलियां बक़दर नख़ूद [चनेकी बराबर] बनाऐं और एक गोली तीन दिन खिलाऐं और शीर [दूध] में अर्क़ धतूरा व घी हमवज़न मिला कर ज़ख़्म पर लगाऐं।

*सग दीवानेके काटेकी अलामात पह-चान यह है कि सर्द पानी उसके जि-स्म पर डालनेसे जिस्म गरम हो जाता है अब कुछ अर्से बाद यह मर्ज़ औद करता है तो अन्देशाहाय बद ग़म व ग़ुस्सा व इख़्तलात अक़ल ख़ुश्की दहन प्यास रोशनीसे नफ़रत सुर्ख़ी अफ़ज़ा ख़सूसन चहरे की डरना भागना कभी मिस्ल कुत्तेके भोंकना सर्द पसी-ने का आना पेशाब सियाहव रक़ीक़ (पतला) हो जाना कभी हब्स बोल [बेताब रहना] व क़ब्ज़ कभी कभी पेशाब में कीड़े बशकल कुत्ते के निकलना आइने में अपनीशकल मिस्ल कुत्ते के नज़र आना और उससे डरना वग़ैरा अलामात ज़ाहिर होती हैं अगर ज़ख़्म से खून खुद ब खुद बहुत निकले पेशाब आये और पानी से डरने का खौफ़ न रहे तो इलाज पज़ीर है बहतर है कि मरीज़ को प्यादा या सवार इस क़दर दौड़ायें कि जिस्म से खूब पसीना बहे और ज़ख़्म को चालीस योम तक भरने न दे।

९— संखिया

आक की टेमनी यानी सब से ऊपर की फुनकी पर की सबसे खुर्द [छोटी] पत्ती एक छटांक घी में घोट कर पिलायें।

१० अमराज औजाअ मफ़ासिल

(जोड़ों का दर्द) व ज़हर व अक़रब व रिज्ल व सद्र

अलामात.शाना, कुहनी, घुट-ना टख़ना वग़ैरा जोड़ों के दर्द को वजअ मफ़ासिल [गठिया] पीठ व कमर के दर्द को वजअ-उज़-ज़हर

एड़ी के दर्द को वजअ-उल-अक़ब; तलवों के दर्द को वजअ-उल-रिज्ल और सीने के दर्द को वजअ-उस-सद्र कहते हैं औजाअ् मफ़ासिल में से टख़ना और हाथ पांवकी उंगलियां ख़ुसूसन [मुख्य कर] अगूंठों के दर्द को निक़रिस, कूल्हे के दर्द को वजअ-उल-वरिक और सुरीन[चूतड़ या कूल्हे] से शुरूअ होकर कभी ज़ानू तक और कभी टख़ने और पांव की उंगलयों तक पहुंचने वाले दर्द को इर्क़-उन-निसां [रांधन] कहते हैं॥ वजअ मफ़ासिल का मर्ज़ शदीद ज़ुकाम की अळामत से शुरू होता है और इब्तदाय मरज़ में पुश्त और हाथ पाँव में शिद्दत से दर्द होता है सर्दी मालूम होकर बदन जिकड़ जाता है और बाद दो चार रोज़ के बड़े २ जोड़ों में सोज़िश होकर वह सुर्ख़ हो जाते हैं तिशनगी (प्यास) ब-शिद्दत और भूख साक़ित (गिरी हुई), नब्ज़ ज़ोर पर सख़्त और ज्यादा तड़पदार हो जाती है ज़बान पर एक सुफ़ेद रंग की दबीज़ और मुला यम फ़रचिमटी रहती है पाख़ाना क़ब्ज से होता है पेशाब कम और सुर्ख़ रंग हो जाता है बाद चंद रोज़ के और जोड़ोंको यह मरज़ घेर कर एक से दूसरे में मुत्तसिल हो जाता है यह बीमारी बग़ैर मुतवातिर (लगातार) मुनज़िज (पकाने वाली औषधी) व मुसहिल (दस्त लाने वाली औषधी) व क़ै या फ़स्द के जड़ से नहीं जाती और जब एक बार हो जाती है तो अक्सर मौसिम सर्मा [जाड़ा] में हर साल ज़ुहूर पकड़ती है [उभर आती है] इस में अलावा जोड़ों के दर्द के, वरम व बेचैनी व ख़फ़ीफ़ [हलका] बुख़ार भी अक्सर हो जाते हैं।

अस्बाब. सर्दी ज्यादह खाना, बहुत भीगना, बवासीर का ख़ून बन्द हो जाना कसरत जमाअ (अधिक स्त्री प्रसंग), पसीने में हवा या सर्दी लग जाना मुसहिल में सर्द हवा लगना बरसात या जाड़ों में लहस्सी वग़ैरा बहुत सर्द चीज़ेंखाना पीना शराब व दूध एक वक्तमेंपीना सख़्त ज़रबे (शरीरसे पाषणादि के टकरानेकी चोट) या सक़ते(पाषणादि से शरीर के टकराने की चोट) से हड्डियों में ज़रर (हानि) पहुंचना जोड़ों व गांठोंके ज़ोफ़ [निर्बलता] से हर तरफ़ से फ़वाद गिर कर उन में जमा हो जाना, यक दम तर्क रियाज़त [व्यायाम छोड़ना] करना ब-शाइस ज़ोफ़ हज़्म मेदा [पाचक शक्तिकी निर्बलताके कारण]ख़िल्त ख़ाम [अपक्व वात पित्तादि] पैदा होकर बन्द गाहों [जोड़ों]में जमा होना कसरत मै नोशी (अधिक शराब पीना) खाना खाकर मुजामअत [स्त्री प्रसंग] या रियाज़त [व्यायाम कसरत] या हम्माम [स्नान] करना, कसरत ज़ुकाम, हरकात सख़्त व ग़ज़ब शदीद [ती-

व क्रोध) व कसरत वहम व ग़म व बेख़्वाबी जिन से कि मवाद् पिघल कर जोड़ों पर गिरता है, वग़ैरा ॥

इलाज (१) अनमोल बूटीकी जड़ नीम कोफ़्ता (अधकुटी) को कड़वे तेलमें जलाएँ। जब जल कर तहम-शीन हो जाय रोग़न (तेल) को छान लें और मलें। यह रोग़न रियाह (दर्द पैदा करने वाली वायु) को भी तहलील करता है ॥

(२) अनमोल बूटी और मेंहदी, संभालू, नाज़बो (रेहान या बन – तुल्सी), धतूरा, अरंड, मकोय इन सब के हमवज़न सब्ज़ पत्तों का अर्क़ निकाल कर और अर्क़ के हम वज़न रोग़न कुंजद् (मीठा तेल तिलों का) मिलाकर जोश दें और इस्बंद् यक तोला, तुख़्म सोया यक तोला, अजवायन ६ माशे मिलाएँ, जब अर्क़ सब जल कर सिर्फ़ रोग़न रहजाय आग से उतार कर छान लें और अफ़यून २माशे इस में पहिले मिला कर फिर सूरंजान तल्ख़ यक तोला, बारीक पीस कर मिला लें और इस रोग़न की मालिश मुक़ाम दर्द पर करें, जल्द शिफ़ाय कुल्ली (पूर्ण निरोगता) होगी ॥ सर्दी या चोट वग़ैराके सब क़िस्मके दर्द के लिये ख़्वाह किसी उज़्व (अंग) में हो मुफ़ीद है ॥

(३) फ़ालिज व लक़वे के नुस्ख़ा नं० १ की गोलियों में से एक गोली रोज़ एक हफ़्ते तक खाएँ ॥

(४) ज़ानू के दर्द के लिये और नीज़ हर क़िस्म के औजाअ बारिदा (सर्दीके दर्द) के लिये अनमोलबूटी के ताज़ा पत्ते नीम गर्म करके बांधें॥

(५) अनमोल बूटी, अमर बेल, अरंड, अर्नी, धतूरा, और मेमड़ी, इन सब का एक एक छटांक अर्क़ और रोग़न कुंजद (तिल का तेल) एक छटांक सब को मिला कर आग पर जोश दें कि जल कर सिर्फ़ तेल रह जाय, इस तेल को मलें, वजअ-मफ़ासिल (गठिया) व वजअ-उज़-ज़हर वग़ैरा सबको मुफ़ीद है ॥

(६) और अनमोल बूटी, ताल-मखाना, गूदा घी-क्वार, रेवन्द् चीनी हरेक १ तोला, शकर साढ़े तीन तोला, सब को पीस कर आहनी (लोहे का) बर्तन में गरम कर के गाढ़ा लेप करें। ख़ुसूसन वरम और दर्द घुटने के लिये बहुत मुफ़ीद है। एक हफ़्ते में आराम हो जायगा ॥

परहेज़ – तुर्शी, सर्द ग़िज़ा, शराब, कसरत तुआम (बहुत खाना) ॥

(११) तप लर्ज़ा

अलामात–सफ़रावी:– अगर माद्दा सफ़रावी (पित्तका) तरूक़(रग

हाय बदन के) बाहर मुतअफ़्फ़न (गंदा=दूषित)हो तो तीसरे रोज़ लर्ज़े के साथ तपआतीहै और अगर माद्दा रगों के अन्दर मुतअफ़्फ़न (बूदार= गंदा=दुर्गन्धित) हो तो तप ख़फ़ीफ़ (हलका) हरदम रहती है और तीसरे रोज़ ग़लबा (ज़ोर) करती है तप सफ़रावी (पित्त का) में सफ़रे की ज़ियादती, मुंह की तल्ख़ी, नींद की कमी, प्यास की शिद्दत, और रंग की ज़र्दी, दस्त किसी क़दर पतला, माइल-ब-ज़र्दी वग़ैरा लाज़िमी अलामात हैं ॥

बलग़मी– अगर माद्दा रगों के बाहर मुतअफ़्फ़न हो तो हर रोज़ लर्ज़े के साथ ग़लबा करती है। और अगर रगों के अंदर उसका माद्दा मुतअफ़्फ़न हो तो बिला लर्ज़े के हर दम रहती है। तप बलग़मी में प्यास की शिद्दत, मुंह का फीका–पन, ज़ायक़ा मीठा या नमकीन, नींद का ग़लबा, क़ारूरे में सुफ़ैदी, खाने से नफ़रत वग़ैरा अलामात लाज़िमी हैं ॥

तप सौदावी– इसका माद्दा अक्सर रगों के बाहर ही मुतअफ़्फ़न होताहै। यह तप दो रोज़ दरम्यान में छोड़ कर चौथे रोज़ उमूमन सर्दी के साथ आती है जिसे तपे-रिबअ या बुख़ार चौथइया कहते हैं। यह तप अक्सर बरसों रहती है, ब-दुश्वारी रफ़अ होती है। इस में मुंह व हल्क़ में ख़ुश्की, नींद की कमी, छींक का न आना, जिल्द की ख़ुश्की, दर्द सर, क़ब्ज़, जम्हाई, ज़ायक़ा फीका, पाख़ाना माइल ब–स्याही, वग़ैरा अलामात लाज़िमी हैं ॥

अस्बाब– बद परहेज़ी खाने पीने व सोने वग़ैरा में, ज़ौफ़ मेदा, ज़्यादा महनत, बद हज़मी, वग़ैरा ॥

इलाज– (१) अनमोल बूटीकी जड़ की छाल दो तोला व मिर्च स्याह एक तोला को बकरी के दूध ख़ालिस में पीस कर चने की बराबर गोलियां बना रक्खें और आमद तपसे क़रीबन एक घंटे क़ब्ल (पहिले) एक गोली खिलाएँ। दो तीन रोज़ खिलानेसे तप लर्ज़ा बिल्कुल छूट जायगा, ॥

(२) अनमोल बूटी के ज़र्द पत्तों को कोयलों की आग में राख कर लें और ४ रत्ती राख गुड़ सह - साला (तिवर्षा) में मिला कर ब वक्त सुबह या आमद तप से एक डेढ़ घंटे क़ब्ल खिलाएँ दो तीन यौम (दिन) में बलग़मी तप लर्ज़ा बिल्कुल छूट जायगा।

(३) ज़ीक़-उन-नफ़्स का नुस्ख़ा नम्बर १६ तप कुहना (जीर्ण ज्वर)

के लिये भी मुफ़ीद है ॥

[४] फ़ालिज व लक़वे के नुस्खे नम्बर एक को गोलियों में से चार गोली आमद तप बलग़मी से क़ब्ल [पहिले] खाएँ ॥

[५] अनमोल बूटी की एक मुंह बन्द कली को गुड़ में लपेट कर गोली बना कर आमद तप से क़ब्ल निगल जाएँ; इसी तरह तीन रोज़ खाने से बलग़मी तप लर्ज़ा बिलकुल दफ़अ [दूर] हो जायगा ॥

[६] अनमोल बूटी की छाल खुश्क या तर चार माशे को बारीक पीस कर और तोले भर गुड़ में मिला कर १२ गोलियां बना लें; इन में एक एक गोली करके तीन चार बार के खाने से बुख़ारके साथ अगर खांसी या सीने पर दर्द हो वह भी काफ़ूर हो जायगा ॥

परहेज़– नए बुख़ार में मुसहिल लेना या दूध पीना, जमाअ [स्त्री प्रसंग] करना, ज़ियादा महनत करना, लिखना पढ़ना, सक़ील ग़िज़ा [गृह भोजन] व तुर्शी खाना, दातौन करना, ज़ियादा पानी पीना, घी खाना, पुर्वाई हवा लगना ॥

अन्य उपयोगी उर्दू पुस्तकें

१– अनमोलबूटी– यही किताब उर्दू में; मूल्य ≡)॥

२– ज़मीमा अनमोल बूटी- इस में सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातु उपधातु को अनमोल बूटी (आक) में फूंक कर भस्म बनाना, और उनके गुण और अनुपानादि अर्थात् सेवन विधि आदि का पूरा २ सविस्तर वर्णन है मूल्य -)।

३,४– फ़ादे ज़हर- यह पुस्तक तीन भागों में है, पहिले भाग में सांप, बिच्छू, बोवला कुत्ता आदि सर्व ज़हरीले जानवरों के काटे की, दूसरे भाग में अफ़यून, कुचला, भिलावा धतूरा आदि बनास्पति के ज़हरों की; और तीसरे भाग में संखिया, हरताल, आदि धातुओं के ज़हरों की बड़ी सुगम चिकित्सा है और बहुत सी अन्य उपयोगी बातें हैं, मूल्य प्रथम भाग ≡)॥ द्वितीय तृतीय भाग =)॥

५,६,७– हफ़्त जवाहर- इसमें वैद्यक, धर्म शास्त्र, शिल्प आदि सम्रत सम्बन्धी सैकड़ों परमार्थिक और साँसारिक उपयोगी बातें तीन भागों में वर्णित हैं, मूल्य हर भाग का ।-)

८– राम चरित्र – सारी रामायण अति प्राचीन और प्रसिद्ध पदम पुराण नामक ग्रन्थ के आधार पर उपन्यास के ढंग में बड़ी रोचक भाषा में, मुल्य ॥)

९,१०,११– हनूमान चरित्र नौखिल –उपरोक्त रामायण के आधार पर बड़ी ही रोचक और हृदय ग्राही भाषा में हनुमान जी की जन्म कुण्डली और उनकी पूर्ण बंशावली आदि सहित ३५४ बड़े पृष्ठ के तीन भागों में मूल्य प्रथम भाग १) द्वितीय भाग ।॥) तृतीय भाग ॥=) तीनों भाग २)

१२,१३,१४– मिथ्यात्व नाशक नाटक – इसमें जैन, बौद्ध, आर्य, मुहम्मदी, ईसाई, वेदान्ती, मीमानसिक, नैयायक आदि मत मतान्तरों का सारांश एक अदालती मुक़द्दमे के ढंग पर अति रोचक बाणी में तीन भागोंमें है, मूल्य प्रथम भाग ।) दूसरा भाग ।=) तीसरा भाग ॥=) तीनों भाग १)

१५– भोज प्रबन्ध नाटक प्रथम भाग – धार्मिक और नैतिक आदि रत्नों का भंडार, मूल्य =)॥